॥ तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय ॥

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

वर्ष - 20 अंक - 2 अप्रैल-जून 2025

महर्षि गौतम जयन्ती पर यज्ञ के बाद आरती करते हुए

गौतम सदन का अभिनव स्वरूप

गौतम जयन्ती पर महर्षि की प्रतिमा पर जल चढाते हुए

प्रकाशक :
श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति, पुष्कर, अजमेर (राज.)

प्रबन्ध समिति भारतीय विद्या मन्दिर, पाली द्वारा संचालित

कृष्णा इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एवं इंजीनियरिंग (पॉलिटेक्निक कॉलेज)

त्रिवर्षीय इंजीनियरिंग डिप्लोमा

सिविल | मैकेनिकल | इलेक्ट्रीकल

प्रवेश योग्यता : प्रथम वर्ष : कक्षा 10 वीं उत्तीर्ण द्वितीय वर्ष : कक्षा 12 वीं (विज्ञान-गणित अथवा द्विवर्षीय आई. टी. आई)

भारतीय विद्या मन्दिर महिला बी.एड.कॉलेज, पाली

रामदेव बी. एड्. कॉलेज, जैसलमेर

भारतीय विद्या मन्दिर बी.एस.टी.सी.कॉलेज, पाली

कृष्णा प्रा. आई. टी. आई.

चिमनपुरा, पाली (राज.) फोन : 02932 258441 मो. 92144 91774, 97841 98474

मारवाड़ प्रा.आई. टी. आई., मारवाड़ ज.

ट्रेड : इलेक्ट्रिशियन, वायरमैन, डिजल मैकेनिक, अवधि 2 वर्ष, प्रवेश योग्यता 10 वीं उत्तीर्ण

भारतीय विद्या मन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, पाली

भारतीय विद्यापीठ माध्यमिक विद्यालय, पाली

भारतेन्दु कॉलेज, पाली मारवाड़

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान शिक्षा विभाग भारत सरकार (NIOS) द्वारा संचालित 10 वीं एवं 12 वीं उत्तीर्ण करें।

मान्य विश्वविद्यालय द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम से बी. ए., बी. कॉम, एम. ए, एम. कॉम, एम. ए. (एज्यूकेशन) उत्तीर्ण करे।

गोरधन जोशी
प्रबन्ध निदेशक
87693 19941

सुनील जोशी
सचिव
92144 91774

हेमन्त जोशी
निदेशक
92143 76663

शुभम जोशी
उपाध्यक्ष
90010 81912

शिवम जोशी
समन्वयक
97841 98474

सीताराम जोशी
अध्यक्ष
98757 26002

कृष्णा कॉलेज, राम नगर, पाली

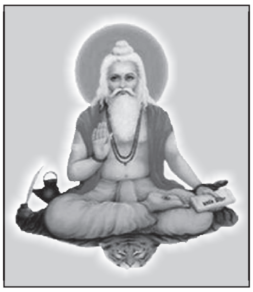

।। तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय।।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

आश्रम दूरभाष : 0145-2772112,

व्हाटसेप नं. 9352796455

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति का त्रैमासिक मुखपत्र

(सदस्यों में निःशुल्क प्रसारण)

वर्ष - 20 अंक - 2 अप्रैल - जून 2025

E-mail : gautamashrampushkar@gmail.com Web : www.gautamashrampushkar.com

संरक्षक :
सीताराम जोशी
पाली
9414590841
9875726002

परामर्श :
मोहनराज उपाध्याय
लाम्पोलाई
9414119195
7665019195

प्रबन्धन :
बालकृष्ण शर्मा
अजमेर
9413345016

सम्पादक :
शिवराज चाष्टा
अजमेर
9414284277

सह-सम्पादक :
देवराज शर्मा
पाली
9461717418

उप-सम्पादक :
सन्दीप जोशी
अजमेर
9251477334
9001195241

सम्पादकीय......

सम्मानित ट्रस्टीगण तथा समाज बन्धु

सादर वन्देमातरम

श्री पुष्कर गौतमाश्रम संवाद पत्रिका का बीसवें वर्ष का यह द्वितीय अंक आप सभी पाठक बन्धुओं के पठनार्थ प्रस्तुत है। अंक में श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्बन्धी गत तीन माह की गतिविधियां तथा उपलब्धियां प्रस्तुत की गई हैं जिनसे ट्रस्टीगणों और समस्त समाज बन्धुओं को गौतमाश्रम की उत्तरोत्तर प्रगति की जानकारी प्राप्त होती है। आश्रम की प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक की कार्यवाही के अंक में प्रस्तुतिकरण से यह भी सभी को जानकारी मिल जाती है कि कौन से ऐसे कार्य या योजना हैं जो काफी समय से लम्बित हैं और धरातल पर नहीं उतर पा रहे हैं। ऐसी ही एक योजना शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान हेतु जमीन क्रय न कर पाने से अटकी हुई है। प्रसन्नता की बात है कि अब फिर से राज्य सरकार से जमीन प्राप्त करने हेतु अजमेर विकास प्राधिकरण तथा पुष्कर नगर परिषद में फाइलें लगाई गई हैं। राजनैतिक प्रभाव से यह समस्या हल हो सकती है।

इसी अवधि में आश्रम स्थित भगवान आशुतोष के मन्दिर जिसकी प्राण-प्रतिष्ठा को एक वर्ष पूर्ण हो गया है का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव आनन्द पूर्वक मनाया गया। इसके अन्तर्गत 4 फरवरी से 10 फरवरी तक शिवमहापुराण कथा तथा ज्योतिष कर्मकांड शिक्षा शिविर का भी आयोजन किया गया।

महर्षि गौतम जयन्ती की शुभकामनाओं सहित,

भवदीय
शिवराज चाष्टा
सम्पादक

गौतमाश्रम समाचार............

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की माह जनवरी 2025 से मार्च 2025 की तीन माह अवधि की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ न्यासी महानुभावों तथा समाज बन्धुओ की सूचनार्थ निम्न प्रकार है–

1. इन तीन महिनों की अवधि में कुल 6355 यात्रियों को आवासीय सुविधायें प्रदान की गई जिसमें 61 यात्री बसों के यात्री भी सम्मलित है। इन 6355 यात्रियों में से 1325 यात्री हमारे समाज बन्धु थे एवं शेष 5030 अन्य समाज के थे। इन तीन महीनों की अवधि में 09 शादी समारोह, 01 श्रीमद् भागवत् कथा, 01 RSS कार्यक्रम 01 प्रबन्ध कारिणी समिति की मीटिंग का आयोजन हुआ जिससे आश्रम को 33,49,992/– की आय प्राप्त हुई है।

2. उपरोक्त अवधि में समाज बन्धुओं की ओर से विभिन्न मदों में 69,474/– की राशि आश्रम विकास एवं भेट सहयोग स्वरूप प्राप्त हुई है। इसमें 1000 व उससे ऊपर की राशि प्रदाताओं का विवरण निम्न प्रकार है।

क्र.सं	दानदाता	निवास	राशि	मद
1	श्री जवाहर जी उपाध्याय	जोधपुर	11500/–	भेंट/सहयोग
2	श्री जवाहर जी उपाध्याय	जोधपुर	11000/–	कार्तिक पूर्णिमा सहयोग
3	श्री बालकिशन जी जोशी	तेलंगाना	11000/–	भेंट/सहयोग
4	श्रीमती लीलावती शर्मा पत्नी श्री हनुमान प्रसाद शर्मा	अजमेर	5100/–	शिव पाटोत्सव सहयोग
5	श्री बालकृष्ण शर्मा	जूनिया	5100/–	शिव पाटोत्सव सहयोग
6	श्री सागर शर्मा	ओरंगाबाद	5001/–	भेंट/सहयोग
7	श्री कमलेश जी	मुम्बई	2100/–	भेंट/सहयोग
8	श्री रमेश जी शर्मा	ब्यावर	2100/–	शिव पाटोत्सव सहयोग
9	श्री राधेश्याम जी जोशी	बिजयनगर	1400/–	भेंट/सहयोग
10	श्री जब्बरमल जी	बांसेड (परबतसर)	1300/–	भेंट/सहयोग
11	श्री मोहनराज (गुरू डण्डा वाले)	उज्जैन	1100/–	भेंट/सहयोग
12	श्रीमती चौसर देवी	बान्दरसींदरी	1100/–	भेंट/सहयोग
13	श्री श्याम दत्त जी श्रोत्रिय	अजमेर	1100/–	शिव पाटोत्सव सहयोग
14	श्री कन्हैयालाल जी राणेजा	फलौदी	1100/–	भेंट/सहयोग
15	श्री रामरतन जी	आगुचा	1100/–	भेंट/सहयोग
16	श्री सर्वेश्वर जी तिवाड़ी	अजमेर	1100/–	भेंट/सहयोग

3. श्री पुष्कर गौतम आश्रम की अनुपम योजना ''अन्नक्षेत्र स्थाई कोष'' के अन्तर्गत दिसम्बर 2024 तक 452 समाज बन्धुओं ने इस योजना से जुडकर प्रत्येक ने दस हजार रूपये की राशि स्थाई कोष में जमा कराकर अपने पूर्वजों की पुण्य तिथि व अन्य उपलक्ष में प्रतिवर्ष नियत तिथि पर छात्रावासी विप्र बटुकों के भोजन के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किये जाने अथवा स्मरण किये जाने हेतु इस योजना में भाग लिया है। जनवरी 2025 से मार्च 2025 की अवधि में 01 और समाज बन्धु ने इस योजना में भाग लिया है जिसका विवरण निम्न प्रकार है:–

अन्नक्षेत्र स्थाई कोष में जुड़ने वाले सहभागी

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति में	तिथि
1	श्रीमती पुष्पा शर्मा, अरुण शर्मा (डिडवानिया)	नागपुर	स्व. श्री प्रकाश जी शर्मा पुत्र स्व. श्री सीताराम जी शर्मा	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी

4. उपरोक्त योजना के अन्तर्गत समाज बन्धुओं की ओर से बताई गई तिथि पर उनके प्रियजनों की स्मृति में गौतमाश्रम द्वारा छात्रावासी विप्र बटुकों को भोजन कराकर श्रद्धासुमन अर्पित किये जाते रहे हैं। जनवरी 2025 से मार्च 2025 में आने वाली पुण्य तिथियों एवं जन्म उत्सव पर जिनका पुण्य स्मरण किया गया उनका पूर्ण विवरण निम्न प्रकार है :-

जनवरी माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्री सत्यनारायण जी रमेश जी पंचारिया	अमरावती	स्व. बिहारी लाल जी पंचारिया	पौष शुक्ल द्वितीया
2	श्री रामेश्वर लाल जी, मूलचन्द जी पंचारिया	बैंगलोर	स्व. श्री जयनारायण जी पंचारिया	पौष शुक्ल द्वितीया
3	श्री नंद किशोर जी पुत्र श्री अजयपाल जी तिवाड़ी	अजमेर	स्व. श्री अजयपाल जी तिवाड़ी	पौष शुक्ल तृतीया
4	डा. जगदीश प्रसाद जी शर्मा	मु.पो. चैला हिडौली	स्व. श्रीमती कंचन देवी शर्मा	पौष शुक्ल तृतीया
5	श्री सुरेश जी सुभाष जी महेश जी उपाध्याय	कुचामन सिटी (नागौर)	स्व. श्रीमती भंवरी देवी	पौष शुक्ल पंचमी
6	प्रो. डा. हरिप्रसाद जी जोशी	रतलाम	स्व. श्री मोहन लाल जी जोशी	पौष शुक्ल षष्ठी
7	श्री रवि कान्त जी व्यास	भीलवाड़ा	स्व. नवजात पुत्री	पौष शुक्ल षष्ठी
8	श्री बालकृष्ण जी आचार्य	भोपाल	स्व. बद्रीलाल जी आचार्य	पौष शुक्ल अष्टमी
9	एम. ओमप्रकाश जी पंचारिया	बगडी नगर हॉल चैन्नई	स्व. श्रीमती शान्ति देवी पंचारिया	पौष शुक्ल नवमी
10	श्रीमती पुष्पा उपाध्याय	कर्नाटक	स्व. श्रीमती हरीप्यारी पंचारिया पत्नी श्री वल्लभ जी पंचारिया	पौष शुक्ल नवमी
11	श्री श्यामलाल जी लक्ष्मीलाल जी शर्मा	चित्तौड़	स्व. श्री लक्ष्मी लाल जी शर्मा	पौष शुक्ल दशमी
12	श्रीमती सुन्दर देवी, तारा दंवी, अंजू देवी पंचारिया	लाम्पोलाई	श्रीमती केसर देवी पंचारिया	पौष शुक्ल दशमी
13	श्री अशोक जी त्रिवेदी	अजमेर	स्व. श्रीमती राधा देवी त्रिवेदी	पौष शुक्ल दशमी
14	कु0 शैलजा तिवाड़ी	दिल्ली	स्व. श्रीमती गायत्री देवी	प्रतिवर्ष 2 जनवरी को

15	श्री राजेन्द्र जी एवं शशि देवी पंचारिया	पुष्कर	स्व. श्री परशुराम जी पंचारिया	पौष शुक्ल एकादशी
16	श्री शिवदयाल जी सिंवाल	खुनखुना	स्व. श्री जोधराज जी सिंवाल	पौष शुक्ल द्वादशी
17	श्रीमती मनोरमा पत्नी सुभाष जी जोशी	इन्दौर	स्व. श्रीमती लाली बाई जोशी	पौष शुक्ल त्रयोदशी
18	श्रीमती तारामणि सिंवाल पत्नी शिव दयाल जी	खुनखुना	स्व. श्रीमती सुगनी देवी तिवाड़ी (माताजी)	पौष शुक्ल त्रयोदशी
19	श्री सुरेश जी सुभाष जी महेश जी उपाध्याय	कुचामन सिटी	स्व. श्री देवी दत्त जी उपाध्याय	पौष शुक्ल त्रयोदशी
20	डा. राधेश्याम नारायणदास जी जोशी	अमरावती	स्व. नारायणदास जी जोशी	पौष शुक्ल त्रयोदशी
21	श्री गंगाधर जी उपाध्याय	सीकर	स्व. श्रीमती नर्मदादेवी	पौष शुक्ल चतुर्दशी
22	श्रीमती पुष्पा उपाध्याय	कर्नाटक	स्व. श्री श्रीवल्लभ जी पंचारिया पुत्र श्री किशनलाल जी पंचारिया	पौष शुक्ल चतुर्दशी
23	श्री कैलाशचन्द्र जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. पिताजी इन्द्रराज जी	पौष शुक्ल पूर्णिमा
24	श्री नंद किशोर जी तिवाड़ी	अजमेर	स्व. श्रीमती कमला देवी	माघ कृष्ण प्रतिपदा
25	श्री राजेन्द्र जी, देवेन्द्र जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्रीमती प्रेम देवी उपाध्याय	माघ कृष्ण द्वितीया
26	श्री हेमन्त कुमार जी, दीपक कुमार जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. श्री मुरलीधर जी उपाध्याय	माघ कृष्ण द्वितीया
27	श्री धनश्याम जी गोविन्द जी सुशील जी प्रदीप जी स्नेह उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. रामनिवास जी उपाध्याय	माघ कृष्ण तृतीया
28	श्री सत्य प्रकाश जी शर्मा	भीलवाडा	स्व. श्रीमती चंचल शर्मा	माघ कृष्ण तृतीया
29	श्री सत्यनारायण जी जोशी पुत्र बृजलाल जी जोशी	चुरू	श्री मंयक जोशी पुत्र श्री रविशंकर जी के जन्म उत्सव पर भेंट	माघ कृष्ण पंचमी
30	श्री नरेश जी शर्मा सम्पादक गांव री खबरां	फतेहनगर (उदयपुर)	स्व. श्री फतेहलाल जी शर्मा	माघ कृष्ण सप्तमी
31	श्री देवेन्द्र कुमार जी चाष्टा	इन्दौर	स्व. श्रीमती मंजू देवी	माघ कृष्ण अष्टमी
32	श्री शिवदयाल जी सिंवाल	खुनखुना हाल (मुम्बई)	स्व. श्रीमती आशा देवी सिंवाल	माघ कृष्ण नवमी
33	श्रीमती गोदावरी बाई भारद्वाज	भीलवाड़ा	स्व. श्री पुष्प कान्त जी शर्मा	माघ कृष्ण एकादशी
34	श्रीमती विजयलक्ष्मी उपाध्याय	जयपुर	स्व. श्री सुरेश चन्द्र जी उपाध्याय	माघ कृष्ण एकादशी
35	श्रीमती सुमन व्यास	भीलवाड़ा	स्व. श्रीमती चन्द्र कान्ता जी जोशी	माघ कृष्ण एकादशी
36	श्री रामेश्वर लाल जी पंचारिया	लाम्पोलाई (हाल मु बैंगलोर)	स्व. श्री राजेश कुमार जी	माघ कृष्ण द्वादशी

37	श्री जुगल किशोर जी, सत्यनारायण जी, मोहनराज जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. श्रीमती सरजू देवी उपाध्याय	माघ कृष्ण द्वादशी
38	श्री अनिल कुमार जी जोशी	अजमेर	स्व. श्री जगदीश चन्द्र जी जोशी	माघ कृष्ण त्रयोदशी
39	श्री मयूर गणेश जी गील	संगमनेर	स्व. श्रीमती संतोष बसंत जी गील	माघ कृष्ण अमावस्या
40	श्रीमती शान्ति देवी पत्नी श्री ईश्वर लाल जी जोशी	पाली	स्व. श्री ईश्वरलाल जी जोशी	माघ शुक्ल द्वितीया
41	डा. कैलाश चन्द जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. हकीमसाब श्री रामचन्द्र जी त्रिपाठी	माघ शुक्ल द्वितीया

फरवरी माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्री घीसूलाल जी तिवाड़ी	बगडी नगर हाल–अचरानक्कम	स्व. श्रीमती प्यारी बाई	माघ शुक्ल पंचमी
2	श्री विकास जी जोशी	बड़ोदा	स्व. श्री चक्रवर्ती नरेश जी जोशी	पौष शुक्ल सप्तमी
3	श्रीमती आशा चतुर्वेदी (संजय जी चतुर्वेदी)	ग्वालियर	स्व. श्री रामस्वरूप जी चतुर्वेदी	माघ शुक्ल नवमी
4	श्री मनोज कुमार जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्री सत्यनारायण जी शर्मा	माघ शुक्ल दशमी
5	श्रीमती गंगा देवी व्यास	मुम्बई	स्व. श्री रामदत जी व्यास	माघ शुक्ल द्वादशी
6	श्री श्यामसुंदर जी व्यास	मूंडवा (नागौर)	स्व. श्रीमती राधा देवी व्यास	माघ शुक्ल द्वादशी
7	श्री रतनलाल जी जाजड़ा	जोधपुर	स्व. श्री मोहनलाल जी जाजडा	माघ शुक्ल चतुर्दशी
8	श्री मूलचंद जी, बंकटलाल जी, रामनिवास जी पंचारीया	लाम्पोलाई	स्व. श्री भोलाराम जी पंचारिया	माघ शुक्ल चतुर्दशी
9	श्री शिवरतन जी, श्रीमती गीता देवी तिवाड़ी	उदयपुर	स्व. श्री रामचंद्र जी उपाध्याय	माघ शुक्ल पूर्णिमा
10	श्री बृजमोहन जी, मोतीलाल जी जोशी	इंदौर	स्व. सौ. सरजू बाई	माघ शुक्ल पूर्णिमा
11	श्री जे.पी. जी त्रिवेदी	सिकन्दराबाद	स्व. श्रीमती मोहनी बाई त्रिवेदी	माघ शुक्ल पूर्णिमा
12	श्री सी. विकास जी जोशी	बड़ौदरा	स्व. श्रीमती सरला देवी जोशी	माघ शुक्ल पूर्णिमा
13	श्री सुमित जी त्रिवेदी पुत्र श्री जे.पी त्रिवेदी	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव (पुत्र)	प्रतिवर्ष 12 फरवरी
14	श्री धनराज जी, सत्यनारायण जी सिंवाल	खुनखुना	स्व. श्रीमती नानी देवी पत्नी श्री लादू राम जी	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा
15	श्री कैलाशचन्द्र जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. श्रीमती मोहनी बाई	फाल्गुन कृष्ण द्वितीया
16	श्री बालकृष्ण जी शर्मा	जूनियाँ (अजमेर)	स्व. श्रीमती कमला शर्मा	फाल्गुन कृष्ण द्वितीया
17	श्री मदनलाल जी शर्मा श्रीमती शोभा शर्मा	अजमेर	स्व. श्री किस्तूर चंद जी जोशी	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी

18	श्रीमती सुशीला देवी बालकृष्ण जी	जोधपुर	जन्मोत्सव पर	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी
19	श्रीमती सोहनी देवी	जोधपुर	स्व. श्री दाउलाल जी उपाध्याय	फाल्गुन कृष्ण पंचमी
20	श्रीमती मंजू प्रभा जोशी पत्नी श्री कैलाश चन्द जी जोशी	अजमेर	स्व. श्री हनुमान दत्त जी जोशी	फाल्गुन कृष्ण पंचमी
21	श्री पुरुषोतम जी सिंवाल	सिलणवाद	स्व. श्रीमती इन्दु बाई	फाल्गुन कृष्ण षष्ठी
22	डॉ. श्री जगदीश प्रसाद जी शर्मा	चैता–बूंदी	स्व. श्री लक्ष्मीनारायण जी दुबे	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी
23	श्री तिलोक चंद जी उपाध्याय लक्ष्मी नारायण जी	लाम्पोलाई	स्व. श्री सत्यनारायण जी उपाध्याय	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी
24	श्रीमती कामिनी पत्नी श्री हेमेन्द्र जी उपाध्याय	अजमेर	स्व. श्री ब्रह्मदत्त जी उपाध्याय	फाल्गुन कृष्णा अष्टमी
25	श्री प्रहलाद जी रामनाथ जी शर्मा	पंचमहल दाहोद (गुजरात)	स्व. श्रीमती मूली देवी	फाल्गुन कृष्ण नवमी
26	श्री हरिमोहन जी शर्मा	बूंदी	श्रीमती कल्याणी देवी पत्नी स्व. गुलाब शंकर जी	फाल्गुन कृष्ण नवमी
27	श्री हरि प्रसाद जी शास्त्री दिनेश जी शर्मा	इंदौर	स्व. श्री लक्ष्मी दत्त जी शास्त्री स्व. श्रीमती मोहनी देवी	फाल्गुन कृष्ण नवमी
28	श्रीमती शैलजा देवी	अजमेर	स्व. श्री इन्द्रदेव जी चाष्टा	फाल्गुन कृष्ण एकादशी
29	श्रीमती ललितेश जी व्यास	अजमेर	स्व. श्रीमती चाँद बाई	फाल्गुन कृष्ण एकादशी
30	श्री नरेश चंद जी पुत्र श्री मुरलीधर जी व्यास	भीलवाड़ा	स्व. श्रीमती जानकी देवी	फाल्गुन कृष्ण द्वादशी
31	श्री सत्यनारायण जी शर्मा	रतलाम	स्व. श्रीमती वीणा जोशी	फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी
32	श्री प्रकाश जी पंचारिया	सोलापुर	स्व. श्री जवाहर लाल जी गणेश जी पंचारिया	फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी
33	श्री विष्णु दत जी गील	अजमेर	स्व. श्री रामेश्वर जी गील	फाल्गुन कृष्ण अमावस्या
34	श्री नरेन्द्र कुमार जी पंचोली	इंदौर	स्व. श्री मनोहर लाल जी पंचोली	फाल्गुन कृष्ण अमावस्या
35	श्री श्याम सुन्दर जी सुल्तानियाँ	शाहपुरा (भीलवाडा)	स्व. श्री भंवर लाल जी सुल्तानियाँ	फाल्गुन कृष्ण अमावस्या

मार्च माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्री राजेन्द्र जी पुत्र श्री राधाकृष्ण जी व्यास	अजमेर	स्व. श्रीमती संतोष देवी	फाल्गुन शुक्ल तृतीया
2	श्री ओमप्रकाश जी (चन्द्रतारा) तिवाडी	सोलापुर	स्व. श्री घासीराम जी रामस्वरूप जी तिवाडी	फाल्गुन शुक्ल तृतीया
3	श्री ज्ञानदत जी तिवाडी	दिल्ली	स्व. श्री रामदत जी तिवाडी	फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी

4	श्री सतीश जी विनोद जी अजय जी उपाध्याय	न्यु मुम्बई व आकोला	स्व. श्रीमती निर्मला देवी	फाल्गुन शुक्ल पंचमी
5	श्री नैवेद्य जी चाष्टा गुरु	इंदौर	स्व. श्रीमती ज्योत्सना शर्मा पत्नी पुरुषोतम जी शर्मा	फाल्गुन शुक्ल सप्तमी
6	श्री श्याम सुन्दर जी व्यास	मून्डवा (नागौर)	स्व. श्री पं. जुगलकिशोर जी व्यास	फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
7	श्री पंकज जी, मांगीलाल जी उपाध्याय	बडौदा	स्व. श्री सूरज करण जी उपाध्याय	फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
8	श्री विजय कुमार जी लूणकरण जी उपाध्याय	सोलापुर	स्व. श्री हरि लूणकरण जी उपाध्याय	फाल्गुन शुक्ल नवमी
9	श्री मुरलीधर जी ओमप्रकाश जी द्विवेदी (सांखी)	सोलापुर	स्व. श्री बद्रीनारायण जी रामकिशोर जी द्विवेदी	फाल्गुन शुक्ल दशमी
10	श्री ओमप्रकाश जी जोशी	जोधपुर	स्व. श्री शिवकुमार जी जोशी	फाल्गुन शुक्ल दशमी
11	श्रीमती राधा देवी पत्नी स्व. श्री गोपी किशन जी	ग्वालियर	स्व. गोपी किशन जी तिवाड़ी	फाल्गुन शुक्ल दशमी
12	श्री यशेश जी उपाध्याय	मंगलम सीटी रतलाम	स्व. श्री योगेन्द्र जी उपाध्याय	फाल्गुन शुक्ल एकादशी
13	श्री जगननिवास जी पंचारिया	मुम्बई	स्व. श्रीमती रतन बाई पत्नी किशन लाल जी	फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी
14	श्री रामस्वरुप जी पंचारिया	अहमदाबाद	स्व. श्रीमती देवकी बाई पंचारिया	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी
15	श्री जुगल किशोर जी सत्यनारायण जी मोहनराज जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. श्री चतुर्भुज जी उपाध्याय	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी
16	श्री शरद जी, बाला प्रसाद जी तिवाडी	पूना	स्व. श्री बाला प्रसाद जी तिवाड़ी	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी
17	श्रीमती सुशीला देवी शर्मा	जोधपुर	स्व. श्री बालकिशन जी पंचोली	फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा
18	श्री तिलोक चन्द जी, श्री सत्यनारायण जी उपाध्याय	लाम्पोलाई (नागौर)	स्व. श्रीमती रेणु देवी उपाध्याय पत्नी श्री त्रिलोक चन्द जी उपाध्याय	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा
19	श्री प्रेमनारायण जी नाथूलाल जी व्यास	इंदौर	स्व. श्री नाथूलाल जी सीताराम जी व्यास	चैत्र कृष्ण द्वितीया
20	श्री कैलाशचन्द जी त्रिपाठी	कोठियां (अजमेर)	स्व. श्रीमती उमा जोशी	चैत्र कृष्ण तृतीया
21	श्री संजय कुमार विजय कुमार जी उपाध्याय	सोलापुर	स्व. श्रीमती बसन्ती देवी पत्नी श्री लूणकरण जी उपाध्याय	चैत्र कृष्ण चतुर्थी
22	श्रीमती ललिता देवी शर्मा, रोहित जी चाष्टा	अजमेर	स्व. श्री रवीन्द्र प्रकाश जी चाष्टा	चैत्र कृष्ण चतुर्थी
23	श्री सतीश जी, गिरीश जी जोशी	अष्टी महा. (नगर)	स्व. श्री विट्ठलदास जी उदेराम जी जोशी	चैत्र कृष्ण अष्टमी

24	श्री संदीप जी चैबे पुत्र श्री मिट्ठूलाल जी	भीलवाडा	स्व. श्रीमती सुशीला देवी चैबे	चैत्र कृष्ण अष्टमी
25	श्री के.सी शर्मा जी	भोपाल	स्व. श्रीमती उर्मिला त्रिपाठी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
26	श्री कैलाशचन्द जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. श्रीमती उर्मिला त्रिपाठी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
27	श्री धरनीधर जी तिवाड़ी पुत्र प्रशान्त, निशान्त	उदयपुर	स्व. श्रीमती मूली बाई पत्नी श्री मोती लाल जी तिवाड़ी	चैत्र कृष्ण दशमी
28	श्रीमती संतोष देवी पत्नी श्री राधेश्याम शर्मा	राजसमन्द	जन्म दिवस के उपलक्ष में	चैत्र कृष्ण दशमी
29	श्रीमती राधा मोहन जी शर्मा	बूंदी	स्व. श्री गोपीलाल जी शर्मा एवं श्रीमती गंगा देवी	चैत्र कृष्ण एकादशी
30	श्रीमती कृष्णा शर्मा	भीलवाडा	स्व. श्रीमती शान्ता देवी शर्मा	चैत्र कृष्ण अमावस्या
31	श्री बालाप्रसाद पूरणमल जी तिवाड़ी	पूना	स्व. श्रीमती पार्वती बाई	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
32	श्री संतोष जी, अशोक जी, गोपी जी कलवाडिया	सुजानगढ़	श्री लखमीचंद कमला देवी की प्रेरणा से	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
33	श्री विद्याधर जी चौबे	पुर-भीलवाड़ा	स्वेच्छा से	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
34	श्री कृष्णवल्लभ जी शर्मा	ब्यावर	माताजी श्रीमती पार्वती देवी शर्मा	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
35	श्री सत्यनारायण जी भट्ट	भीलवाडा	स्व. श्रीमती गंगा बाई	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
36	श्री सतीश जी, विनोद जी उपाध्याय	आकोला	श्री मनीष कुमार जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल द्वितीया
37	श्री कैलाश जी महेश जी स्व. योगेश जी, लोकेश जी आचार्य	उदयपुर	स्व. श्रीमती बसन्ती देवी आचार्य	चैत्र शुक्ल द्वितीया
38	श्री अक्षय शर्मा	(गुंदोज) सिरोही	स्व. श्री डा0 बाबूलाल जी शर्मा	चैत्र शुक्ल द्वितीया
39	श्री जीवन प्रकाश जी पुत्र श्री बद्रीनारायण जी त्रिवेदी	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव (स्वयं)	प्रतिवर्ष 27 मार्च
40	श्री मुदित त्रिवेदी	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव	प्रतिवर्ष 30 मार्च

ईश्वर सब देखता है

इंग्लैण्ड के एक महानगर में शेक्सपियर का कोई नाटक चल रहा था। बहुत वर्षों पहले सज्ज्नों के लिये नाटक देखना पाप समझा जाता था और पुरोहितों के नाटक देखने का तो सवाल ही नहीं था। एक पादरी नाटक देखने का लोभ संवरण नहीं कर सका। उसने थियेटर के मैनेजर को लिखकर पूछा - 'क्या आप पिछले द्वार से मेरे प्रवेश का इन्तजाम कर पायेंगे, ताकि मुझे कोई आते हुए देख न सके।'

मैनेजर का जवाब आया - 'खेद है, यहाँ कोई ऐसा दरवाजा नहीं है, जो ईश्वर को नजर न आता हो।' सत्य के प्रवेश के लिये पीछे का कोई द्वार नहीं है, परमात्मा सब द्वारों पर खड़ा है।

❑❑❑

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की प्रबन्ध कारिणी समिति बैठक दिनांक 9.2.25 का कार्यवृत्त

आज दिनांक 09.02.2025 (रविवार) को श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति पुष्कर की प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक श्री सीताराम जी जोशी अध्यक्ष ट्रस्ट समिति की अध्यक्षता में प्रातः 11.00 बजे से श्री अहिल्या हॉल में आयोजित हुई।

उपरोक्त सभा में पदाधिकारी, सदस्य, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं समाज बंधु कुल 13 उपस्थित हुए। महामंत्री ने अध्यक्ष जी एवं सभी प्रबन्धकारिणी सदस्यों को अक्षपाद महर्षि गौतम की पूजा अर्चना के लिए आमंत्रित किया। अध्यक्ष महोदय ने विधि विधान से महर्षि की पूजा अर्चना की।

महामंत्री ने अध्यक्ष जी वरि. उपाध्यक्ष, मंत्री जी को मंच पर विराजमान होने का निवेदन किया। महामंत्री ने अध्यक्ष जी से सभा की कार्यवाही प्रारम्भ करने की अनुमति लेते हुए दिनांक 04.01.2025 को प्रेषित एजेण्डे के अनुसार कार्यवाही प्रारंभ की।

मद संख्या 01 - गत बैठक दिनांक 14.11.2024 की कार्यवाही विवरणी की पुष्टि।

महामंत्री ने गत बैठक दिनांक 14.11.2024 की कार्यवाही का पठन किया जिसकी सर्व सम्मति से पुष्टि की गई।

मद संख्या 02 - गत बैठक के निर्णय पर क्रियान्वयन रिपोर्ट।

महामंत्री ने गत बैठक के निर्णयों पर क्रियान्वयन रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए सदन को बताया कि पिछले तीन महिनों में पूर्व में लिये निर्णयों पर कुछ खास प्रगति नही हुई।

पूर्व में लॉकर खरीदने का निर्णय हुआ उसके अनुसार लॉकर खरीद लिया गया है। जल्दी ही पी.एन.बी. में आश्रम लॉकर बन्द कर दिया जायेगा तथा उसमें रखी चीजें आश्रम लॉकर में रख दी जायेंगी।

गत मीटिंग के निर्णय अनुसार तीनों हॉल में ऐ.सी. लगाना, सोलर प्लांट आदि कार्य लम्बित है।

जमीन खरीदने के लिए जो कमेटी बनाई गई। इस बिन्दु पर भी किसी तरह का कार्य नही हो पाया है।

श्री एसपी गौतम साहब, महामंत्री एवं उपमंत्री द्वारा पूर्व में जमीन देखी गई। तहसील में जाकर भी कुछ विवरण जुटाये गये। इस सम्बन्ध में नगर परिषद् में प्रार्थना पत्र भिजवाया गया था।

इस मुद्दे पर सर्वसम्मति से निर्णय लेते हुए दुबारा फ्रेश प्रार्थना पत्र (फाइल) बना कर अजमेर विकास प्राधिकरण अजमेर एवं नगर परिषद पुष्कर को भिजवाई जाये तथा दुबारा से प्रशासन को आश्रम में शैक्षणिक परिषद के लिये भूमि आंवटन के लिये निवेदन किया जाये। महामंत्री ने सदन को भरोसा दिलाया कि इस मुद्दे पर तुरन्त प्रभाव से कार्यवाही कर फाइल अजमेर विकास प्राधिकरण अजमेर और नगर परिषद् पुष्कर को भिजवा कर जमीन आंवटन के लिये निवेदन किया जायेगा।

मद संख्या 03 - वर्ष 2025-26 के अनुमानित बजट को स्वीकृति प्रदान करना।

वर्ष 2025-26 के अनुमानित बजट को सदन में प्रस्तुत किया गया जिसको सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई।

मद संख्या 04 - गत बैठक पश्चात कराये कार्यों के खर्चों का अनुमोदन।

आश्रम में निम्नलिखित कार्यो के खर्चों का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया।

1. आश्रम में लॉकर खरीदा राशि रूपये 23010/-
2. रजाई की खोली बनवाने का खर्चा राशि रूपये 34860/-

मद संख्या 05 - आश्रम में कर्मचारियों के वेतन वृद्धि पर विचार कर निर्णय लेना।

श्री सोहन जी ट्रस्टी पाली ने बताया कि हर वर्ष जो बढ़ाते है उसके अनुसार बढ़ा दिया जावे।

श्री वीपी शर्मा जी ने सदन के सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। अंकेक्षक महोदय ने कहा कि आश्रम के कर्मचारियों का व्यवहार एवं कार्य सन्तोषप्रद नहीं है। मुझे इसको देखते हुए बड़ा दुख होता है। इनकी कार्य प्रणाली संतोषप्रद नही होने से आश्रम की इनकम पर भी फर्क पड़ा है। मैने देखा है कि आश्रम की आमदनी में भी कमी आयी है। इस मुद्दे पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

दूसरे संस्थानों की तुलना में हमारे कर्मचारियों की सैलेरी कम है। आपने कहा कि वेतन 12000/- रूपये कर दिया जाये। श्री के.सी. शर्मा जी ने बताया कि जो कर्मचारी काम नही करता या किसी तरह की उदण्डता करता है तो उसकी वेतन वृद्वि रोक दी जाये।

श्री सोहन जी ने बताया कि वेतन की तो हम दूसरी संस्थाओं से तुलना करते है पर काम की नही करते। दूसरी संस्थाओं के कर्मचारी काम भी अच्छा करते है तो उनको वेतन भी अच्छा मिलता है। अपने कर्मचारी काम नही करते इससे आश्रम की आमदनी भी कम होती है।

श्री एस.पी. गौतम ने बताया कि वे सुबह 6 से 7 बजे आश्रम आते है तथा कर्मचारियों की लापरवाही के कारण आश्रम में कोई भी आकर कुछ भी ले जाये तो कोई पूछने वाला नही है। यहाँ रोकने टोकने वाला कोई नही है। सहायक मैनेजर को मैंने कुछ काम बताया था जो उसने नही किया तथा माकूल जवाब भी नही दिया। ऐसे कर्मचारी जो काम नही करते उनका वेतन काट लिया जाये।

श्री के.सी शर्मा जी ने कहा कि सभी कर्मचारियों की समान वेतन वृद्धि क्यों की जाती है उनके काम के हिसाब से वेतन वृद्धि की जाये।

महामंत्री ने बताया कि कर्मचारियों की 1000/- रुपए मैनेजर एवं कंप्यूटर ऑपरेटर की 1500/- रूपये एवं अन्य कर्मचारियों की 500/- वेतन वृद्धि को स्वीकृति प्रदान की जाए जिसको सर्व सम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई। कर्मचारियों के काम की पूरी निगरानी की जाये, जो कर्मचारी काम नहीं करे उसको हटा दिया जाये।

श्री हनुमान जी ने कहा कि यह वेतन वृद्धि इसी वर्ष अप्रैल 2025 से मार्च 2026 के लिए है। आगे फिर दोबारा इस पर प्रबंधकारणी विचार करे।

मद संख्या 06 - आश्रम में वर्तमान टेंट एवं बिजली के टेंडर 31 मार्च 2025 को समाप्त होने के कारण नए टेंडर करने पर विचार कर निर्णय लेना।

श्री सोहन जी ने कहा कि टेन्ट एवं बिजली के टेंडर से आश्रम को जो आय होती है वह कम हुई है इससे पहले 15% लेते थे उसको 10% किया गया था।

श्री वीपी शर्मा जी ने अपने विचार रखते हुए बताया कि पूर्व में मैंने 15 से 10% करने का विरोध किया था इसको 15% करना चाहिए। टेंट मालिक को भी आश्रम में सामान के नहीं हटाने तथा इधर-उधर बिखरे रहने के कारण जो व्यवस्था खराब होती है उसके लिए भी पाबन्द करना चाहिए।

श्री केसी शर्मा जी ने प्रश्न उठाया कि इसको 15 से 10% क्यों किया गया।

श्री एसपी गौतम ने वीपी शर्मा के विचारों से सहमति जताई तथा टेंट की व्यवस्थाओं में सुधार पर बल दिया।

श्री रमेश शर्मा जी ने कहा कि जो ज्यादा पैसा देगा वो तो टेण्ट भी अच्छा ही लगवायेगा उसको कैसे रोका जा सकता है।

सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया की टेन्ट एवं बिजली के सहयोग को 10 से 15% कर दिया जाये और टेंट एवं बिजली मालिक इस पर राजी हो तो वर्तमान टेंडर को एक साल और 31 मार्च 2026 तक बढ़ा दिया जाये।

श्री वीपी शर्मा जी ने बताया कि AC सर्विस का ठेका मेंटेनेंस के साथ दिया जाए। इस पर तीन निविदा आमंत्रित कर जिसकी दर कम हो उसको दी जाए। इस बार AC मेंटेनेंस का खर्च बहुत ज्यादा आया है। महामंत्री ने इस पर नियमानुसार निविदा मंगा कर देने का विश्वास दिलाया।

मद संख्या 07 - ट्रस्टीयों के रिक्त पदो को भरने पर विचार कर निर्णय लेना।

निम्नलिखित ट्रस्टियों के देवलोक गमन के कारण रिक्त हुई जगह को विधान की धारा 5 में बताए गए अनुसार भरने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया।

1. स्व. श्री त्रिलोक जी तिवारी पीसांगन अजमेर (ग्रामीण)
2. स्व. श्री देवेंद्र जी चाष्टा मध्य भारत (इंदौर)
3. स्व. श्री अशोक जी तिवारी उत्तर भारत (कानपुर)
4. स्व. श्री वेद प्रकाश जी त्रिपाठी अजमेर (शहर)

श्री वीपी शर्मा जी ने कहा कि महामंत्री द्वारा हस्ताक्षरित परफोर्मा में ही ट्रस्टीयों के प्रस्ताव स्वीकृत किया जाये।

महामंत्री ने विधान की धारा 5 के अनुसार कार्यवाही का भरोसा दिलाया।

मद संख्या 8 - आश्रम की आय में से कुछ विशेष कार्यों

के लिए विशेष सुरक्षित कोष बनाने पर विचार कर निर्णय लेना।

ट्रस्ट समिति के विधान की धारा 12 (घ) में उल्लेखित उद्देश्यों की अनुपालनार्थ एक विशेष कोष का निर्माण किया जाये। जिसके अंतर्गत आश्रम की आय में से 10 लाख रुपये इस सुरक्षित कोष में जमा किये जाएंगे जिसका उपयोग आगामी 5 वर्षो में निम्नलिखित कार्यों में किया जाएगा। 1. नवनिर्माण 2. शैक्षणिक गतिविधियां 3. आश्रम में सोलर प्लांट की व्यवस्था करना 4. आश्रम के पुराने कमरों का नवीनीकरण 5. सामूहिक विवाह आयोजन 6. युवक युवती परिचय सम्मेलन आदि।

मद संख्या 9 - ट्रस्ट के विधान की धारा 12 (घ) के अनुसार शैक्षणिक गतिविधियों हेतु अजमेर विकास प्राधिकरण अजमेर एवं नगर परिषद पुष्कर को भूमि आवंटन हेतु आवेदन करना।

विस्तृत विचार विमर्श पश्चात् सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि विधान की धारा 12 (घ) के अनुसार शैक्षणिक गतिविधियों के लिए पुष्कर क्षेत्र में 10 बीघा भूमि आवंटन के लिए अजमेर विकास प्राधिकरण अजमेर एवं नगर परिषद पुष्कर को आवेदन किया जाए। इस कार्य हेतु महामंत्री को पूर्ण अधिकृत किया जाता है।

मद संख्या 10 - अध्यक्ष की अनुमति से अन्य मुद्दों पर विचार पर निर्णय लेना।

1. आश्रम में पुराने खराब एवं टूटे बर्तनों को देकर नए बर्तन खरीदने को स्वीकृति प्रदान की गई।

2. डनलप के गद्दे खराब हो गए हैं उस मद में 150 नए गद्दे खरीदे जाये।

3. महामंत्री ने बताया कि महर्षि हॉल में AC लगाने के लिए फॉल्ससीलिंग करवाने की आवश्यकता पड़ सकती है। इस पर एक्सपर्ट से राय लेकर आवश्यक कार्य को स्वीकृति प्रदान की गई।

4. महामंत्री ने शतानन्द के 12 कमरों में गद्दे एवं पलंग तथा बाथरूम के नवीनीकरण की आवश्यकता है इस पर सदन ने स्वीकृति प्रदान की।

5. पुराने कॉमन कमरों के नवीनीकरण की प्रक्रिया को स्वीकृति प्रदान की गई इसके अंतर्गत दरवाजा, फ्लोर बदलना और भी अन्य आवश्यक कार्य करने को स्वीकृति प्रदान की गई।

6. कैटरिंग वाले बर्तन धोते हैं वहां बहुत गंदगी होती है इस पर भी आवश्यक निर्णय लिया जाये। श्री वीपी शर्मा जी ने कहा कि इस पर पहले गहन विचार किया जाए जल्दबाजी नहीं करें।

महामंत्री ने आश्रम में कमरों के किराए पैकेज आदि पर पुनर्विचार कर बढ़ाने का निर्णय प्रबंध कारिणी ले इस पर निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किये गये।

श्री सोहन जी ने कहा आश्रम की आय कम हो रही है इसको बढ़ाने के लिए हमने कोई सार्थक चर्चा नहीं की है। महामंत्री ने कमरों के किराए में 100/- की बढ़ोतरी का प्रस्ताव रखा। श्री संदीप जी जोशी ने बताया कि किराए बढ़ाने के बजाय कमरों की बुकिंग बढ़ाने पर विचार होना चाहिए। आजकल बहुत सारी कंपनी है जो ऑनलाइन बुकिंग का कार्य करती है।

श्री के.सी. शर्मा जी ने कहा कि कमरों का किराया नहीं बढ़ाना चाहिए। श्री एस पी गौतम ने कहा कि कमरों का किराया नहीं बढाये। पैकेज में बढ़ोतरी की जा सकती है।

श्री के.सी. शर्मा जी ने आश्रम के विज्ञापन को समाज की जो स्मारिका परिचय सम्मेलन की छपती है उसमें देना चाहिए। इस पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि विज्ञापन दिया जाए इससे गौतम आश्रम का प्रचार प्रसार होगा।

श्री संदीप जी ने कहा कि किराए बढ़ाने की वजह घटना चाहिए ताकि ज्यादा आएंगे और आमदनी बढेगी।

श्री हनुमान प्रसाद जी ने कहा कि भागवत एवं धार्मिक कार्यों के लिए भवन दिया जाए जिसमें पैकेज वाइस पर 20% तक छूट दी जा सकती है छोटी बुकिंग हो और 20 कमरे तक ले उसे कमरेवार किराये पर किसी प्रकार की छूट नहीं दी जाए।

श्री वी.पी. शर्मा जी ने बताया कि माहेश्वरी सेवा सदन में कमरे का किराया 750/- रुपए है। हम 600 एवं 500 रूपये ले रहे हैं। वहां पैकेज 2,21,000/- रुपए का है। अत: पैकेज तो बढाया ही जाये। अभी जो समाज के लिए

1,75,000/- रूपये है उसको 1,90,000/- रुपए व गैर समाज 2,55,000/- रूपये है उसको 2,75,000/- कर दिया जाये। 20 से अधिक कमरे ले तो पैकेज वाइज ही दिया जाये। इस पर सदन नें सहमति देते हुए पैकेज बढ़ाने का प्रस्ताव पारित किया।

श्री के.सी. शर्मा जी ने गौतम आश्रम के प्रचार प्रसार के लिए अधिक विज्ञापन देने का सुझाव दिया।

श्री संदीप जी ने ऑनलाइन बुकिंग के लिए कंपनी से संपर्क करने का सुझाव दे स्वयं ही इस पर कार्य करेंगे ऐसा कहा। कमरों में छोटी-छोटी सुविधा हो जिसमें साबुन, शैंपू, टूथब्रश, हेयर ऑयल पॉउच रखने को कहा जिस पर स्वीकृति प्रदान की गई।

अंत में महामंत्री ने अध्यक्ष जी को धन्यवाद ज्ञापित करने का निवेदन किया। अध्यक्ष जी ने सदन का आभार जताते हुए सकारात्मक चर्चा के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि गौतम आश्रम ऐसे ही उन्नति करता रहे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा सार गर्भित रही।

मद संख्या 11 - ट्रस्टीजनों एवं उनके परिवारजनों के देवलोकगमन पर श्रद्धांजलि अर्पित करना।

निम्नलिखित के देवलोकगमन पर 2 मिनट का मौन रख श्रद्धांजली अर्पित की गई।

1. स्व. श्री अशोक कुमार जी तिवारी ट्रस्टी गौतम आश्रम कानपुर से।
2. स्व. श्रीमती विमला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनलाल जी खटोड़ बड़ी खाटू मैनेजर श्री महेश जी शर्मा की माताजी।
3. स्व. श्रीमती नाथी देवी धर्मपत्नी श्री रामस्वरूप जी तिवारी, स्व. रामस्वरूप जी तिवारी दातड़ा अजमेर श्री केवल किशोर जी ट्रस्टी गौतमाश्रम की चाचीजी एवं चाचाजी।
4. स्व. श्री डॉ. रामप्रसाद जी शर्मा किशनगढ़, श्री गोपी कृष्ण जी व्यास उपाध्यक्ष गौतमाश्रम के ससुर साहब।
5. स्व. श्रीमती पुष्पा देवी शर्मा धर्मपत्नी श्री श्याम जी शर्मा ट्रस्टी गौतमाश्रम निवासी निंम्बेहड़ा।
6. स्व. श्री वेद प्रकाश जी त्रिपाठी अजमेर ट्रस्टी गौतम आश्रम।
7. स्व. श्रीमती मोहनी देवी बगड़ी नगर पाली हॉल मुकाम चैन्नई श्री सत्यप्रकाश जी पंचारिया ट्रस्टी गौतम आश्रम की माताजी।

❑❑❑

धर्म का सार

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् छोटी आयु में एक ईसाई मिशनरी स्कूल के छात्र थे। एक बार उनकी कक्षा में एक शिक्षक पढ़ा रहे थे, जो कि बेहद संकीर्ण मनोवृत्ति के थे। वे हिन्दू धर्म को दकियानूसी, रूढ़िवादी, अन्धविश्वासी आदि कहने लगे। राधाकृष्णन् खड़े होकर बोले कि 'क्या आपका ईसाई मत दूसरे धर्मों की निन्दा करने में विश्वास रखता है ?'

वास्तव में प्रत्येक धर्म समानता एवं एकता का ही सन्देश देता है। उस शिक्षक ने पूछा कि 'क्या हिन्दू धर्म दूसरे धर्मों का सम्मान करता है ?' बालक राधाकृष्णन् ने कहा - 'बिलकुल सर ! हिन्दू धर्म किसी भी अन्य धर्म में कभी बुराई नहीं ढूँढता। स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि पूजा के अनेक मार्ग एवं तरीके हैं। हर मार्ग एक ही लक्ष्य पर पहुँचता है। क्या इस भावना में सब धर्मों को स्थान नहीं मिलता ? हर धर्म के पीछे एक ही भावना है। कोई भी धर्म किसी अन्य धर्म की निन्दा करने की शिक्षा नहीं देता। एक सच्चा एवं सही धार्मिक व्यक्ति वही है, जो सभी धर्मों का सम्मान करे और उनकी अच्छी बातों को ग्रहण करे।'

❑❑❑

वेद मंत्र

''पुरुष एव इदं सर्वं यद् भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्य ईशानो यद् अन्नेन अतिरोहति।।''
(पुरुष, ऋक्. 10.90.2)

शब्दार्थ :- इदं सर्वं- (सृष्टि में) यह जो कुछ भी इस समय विद्यमान है, यद् भूतं- जो कुछ पहले हो चुका है, यत् च भव्यम् और जो कुछ भविष्य में होगा, वह सब, पुरुष एव पुरुष ही है। उत- और, वह पुरुष, यद् अन्नेन अतिरोहति- जो इस अन्नमय अर्थात भौतिक जगत के ऊपर है उस, अमृतत्वस्य -अमरत्व का, ईशान- स्वामी है।

भावार्थ :- इस सृष्टि में जो कुछ भी इस समय विद्यमान है, जो अब तक हो चुका है और आगे जो भविष्य में होगा, वह सब पुरुष (परमात्मा) ही है। वह पुरुष उस अमरत्व का भी स्वामी है, जो इस दृश्यमान भौतिक जगत के ऊपर है। आज का विज्ञान भी मानता है कि इस दृश्यमान जगत के अंदर की सच्चाई इसके ऊपर से दिखने वाले रूप से सर्वथा भिन्न है। जो कुछ हमें दिख रहा है वह केवल अन्नमय जगत है अर्थात जगत का वह रूप है जिसका उपभोग किया जा सकता है, क्योंकि हम संसार के उपभोग में व्यस्त रहते हैं इसलिए हमें जगत का यह दृश्यमान रूप स्वभावत: सच्चा प्रतीत होता है। पर जब हम गहराई में जाते हैं तो ज्ञात होता है कि यह संपूर्ण संसार मूल रूप में चैतन्य स्वरूप परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है।

सृष्टि के इस परम चैतन्य को भारतीय परंपरा में मुख्यतया ब्रह्म और पुरुष इन दो नामों से पुकारा गया है। वेदांत में ब्रह्म शब्द प्रधान है (सर्वं खलु इदं ब्रह्म- इस संसार में जो कुछ भी है वह सब ब्रह्म ही है।) सांख्यदर्शन, जो सामान्यतया भारतीय चिंतन का आधार है, उसी परम चैतन्य को पुरुष नाम देता है। (पुरि शेते इति पुरुष:- जो शरीर रूपी नगर में शयन कर रहा है, वह पुरुष है।)

मनुष्य के जीवन के मूल तत्व उसके शरीर, मन और विचार आदि नहीं हैं अपितु उसके अंदर उठने वाली विभिन्न प्रकार की अनुभूतियां हैं। सुख, दु:ख, चिंता, भय, आशा, निराशा आदि अनुभूतियां प्रत्येक क्षण मनुष्य के जीवन को नियंत्रित करती हैं। हम प्रयत्न के द्वारा कोई अनुभूति अपने अंदर नहीं जगा सकते। न हम जान-बूझकर क्रोध कर सकते हैं और न प्यार। हम केवल उन अनुभूतियों को जान सकते हैं, जो हमारे अंदर उठ चुकी हैं और फिर विवश होकर हम उन अनुभूतियों के अनुसार कार्य करते हैं।

हमारी सभी अनुभूतियां हमसे परे किसी स्रोत से आती हैं, पर मन के सदा अशांत रहने के कारण हम अपनी अनुभूतियों के स्रोत को जान नहीं पाते। यदि हम ध्यान द्वारा अपने मन को सर्वथा शांत कर सकें तो हम देखेंगे कि हमारी अनुभूतियों और विचारों में एक ही अरूप चैतन्य अभिव्यक्त हो रहा है। वही चैतन्य पुरुष हमारा आंतरिक जीवन भी है और हमारे बाहर का जगत भी।

❑❑❑

महाशंकर

'वृक्षों को शंकर क्यों कहते हैं ?' एक पुत्र ने पिता से पूछा। पिता ने वृक्ष में जल डालते हुए कहा - 'बेटा! समुद्रमन्थन हुआ, तब देव और दनुजों ने सब कुछ बाँट लिया, पर विष लेने को कोई तैयार न हुआ। तब उसे शंकर जी ने पीकर मानवता की रक्षा की।'

शंकर जी ने ऐसा एक बार किया, पर मनुष्य गन्दी साँस, धुआँ और सड़ाँध उत्पन्न किया करते हैं, उन्हें जीवन भर ये वृक्ष ही तो पान करके वायु शुद्ध रखते हैं। बोलो, यह क्या हुआ ? - 'महाशंकर। पुत्र ने उत्तर दिया।'

सुख और दुख जीवन का हिस्सा हैं

गीता में यह स्पष्ट कहा गया है कि सुख और दुख, अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ जीवन का हिस्सा हैं, और ये हमारे कर्मों के परिणामस्वरूप आते हैं।

''मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्याः तांस्तितिक्षस्व भारत।।

(गीता 2/14)

अर्थात् हे अर्जुन, इंद्रियों के विषयों (शीत-उष्ण, सुख-दुख) का अनुभव अस्थायी और आते-जाते रहने वाला है। हे भारत, इनको धैर्यपूर्वक सहन करो।

कहने का तात्पर्य है कि जब कुछ 'मन के विपरीत' (जैसे दुख, हानि, या असफलता) होता है, तो गीता कहती है कि इसे अस्थायी मानकर धैर्य रखना चाहिए। यह पूर्व कर्मों का फल हो सकता है, पर इसका मतलब यह नहीं कि हम उसमें उलझ जाएँ। गीता हमें समभाव (equanimity) सिखाती है–सुख और दुख दोनों को समान रूप से देखना।

इससे बढ़कर भी यह भाव है कि जहाँ पर कोई भी मन के विपरीत कार्य होता है, उसमें ऐसा समझना चाहिये कि ऐसी भगवान् की इच्छा है, इसमें भगवान् का हाथ है। भगवान् की आज्ञा के बिना कोई भी काम नहीं हो सकता, इसलिये उसको भगवान् की आज्ञा मानकर खूब प्रसन्न होना चाहिये। इससे और भी ऊँचा भाव यह है कि अपने मन के विपरीत जो भी कार्य होता है उसको भगवान् का पुरस्कार ही समझना चाहिये और उस पुरस्कार में भगवान् की दया का दर्शन करना चाहिये। भगवान् सब कुछ हमारे मंगल के लिये ही करते हैं, यह किस प्रकार मान लिया जाय। मान लीजिये कि हमको हैजा या 105 डिग्री बुखार हो गया अथवा पेट दुखने में कष्ट हुआ, उसमे भगवान् की दया का किस प्रकार अनुभव करना चाहिये। मन की प्रतिकूल अवस्था में दुःख तो आपको स्वाभाविक ही होने लगता है, क्योंकि आपका किसी प्रकार का अनिष्ट होने पर ही आप रोते हैं। कुत्ते की तरफ लाठी लेकर मारने दौड़ते हैं, लेकिन कुत्ते के लाठी पड़ने के पहले ही कुत्ता चिल्लाने लगता है, ऐसा क्यों ? वह कुत्ता भी यह समझता है कि सबमें भगवान् हैं। यदि मैं रोऊँगा तो शायद मेरी रक्षा हो जायगी। भगवान् के अस्तित्व का विश्वास कुत्ते को भी है। अभी उस पर लाठी नहीं पड़ी है। लेकिन वह समझता है शायद रोने से भगवान् की दया से छुटकारा मिल जायगा। इसलिये आप लोगों को भगवान् की दया की ओर ध्यान देना चाहिये। चाहे जो भी बीमारी हैजा या प्लेग किसी भी प्रकार का कष्ट क्यों न हो, वह किसका परिणाम है ? वह आपके पूर्व जन्मों में किये गये पापों का परिणाम है। यह सब बीमारी आदि आपके पाप कर्मों के फलस्वरूप आपके पास आये हैं। जब आप उनको भोग लेते हैं, तब आपके पापों की शान्ति हो जाती है, और आप पापरूपी ऋण से मुक्त हो जाते हैं। ❑❑❑

सच्चा मनुष्य

डॉ. राममनोहर लोहिया एक महान् नेता थे। एक बार वे जर्मनी में थे। संयोग से उनकी कार एक ठेले से टकरा गयी। ठेले वाने की साग-सब्जी सड़क पर गिर पड़ी। ठेले वाले ने लोहिया जी को खूब गालियाँ दीं और बोला - 'मैं पुलिस को बुलाकर लाता हूँ, तब तक तुम यहीं ठहरो।'

लोहिया जी शान्ति से वहाँ खड़े उसकी प्रतीक्षा करने लगे। वह ठेले वाला पुलिस को गालियाँ देते हुए लौटा। पुलिस नहीं आयी। लोहिया जी ने उससे कहा - 'तुम पुलिस छोड़ो। तुम जो भी सजा देना चाहो, वह मुझे स्वीकार है।'

उस आदमी को लोहिया जी को वहाँ खड़ा देखकर ही आश्चर्य हुआ। वह तो सोचता था कि इतनी देर में वे वहाँ से खिसक चुके होंगे। फिर लोहिया जी ने स्वयं ही उसको सजा देने को कहा तो वह विस्मित रह गया।

उसने पूछा - 'आप-जैसे आदमी भी होते हैं क्या? आप किस देश के वासी हैं ?' लोहिया जी ने कहा - 'मैं भारत देश का वासी हूँ।'

❑❑❑

ऐ मेरे वतन के लोगों ......

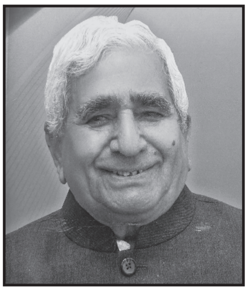

छः दशक पूर्व राष्ट्रीय कवि प्रख्यात गीतकार प्रदीप का देश भक्ति से ओतप्रोत यह गीत लाल किले से हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु की समुपस्थिति में देश की स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने गाया था। जन मानस को आन्दोलित करता एवं राष्ट्र प्रेम की सरिता प्रवाहित करने वाले इस गीत को सुनकर पं. जवाहरलाल नेहरु की आँखों में देश प्रेम के आँसू छलक आए थे। गीत की प्रत्येक पंक्ति भारतीयों में जोश, उत्साह, साहस एवं उल्लास उत्पन्न करती है। यह गीत हमें देश के उन महान सपूतों की याद दिलाता है जो देश की आजादी के लिए, भारत भारती की स्वतंत्रता के लिए शहीद हो गए थे।

यह गीत याद दिलाता है महान संग्राम की, स्वाधीनता आंदोलन की, गांधी की आँधी की, विश्व इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों की, आजादी के दीवानों की, क्रान्तिकारी वीरों की, इन्कलाब जिन्दाबाद के गगनभेदी नारों की। जब माताओं ने अपने लाड़ले सपूतों को, बहिनों ने अपने भाईयों को, स्त्रियों ने अपने सुहाग को मां भारती को दासता की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए घर आंगन से हंसते-हंसते विदा किया था, जो कभी लौट कर नहीं आए। माताओं की सूनी गोद, औरतों का सिन्दूर और बहिनों की राखियाँ इंतजार करती रही। उनकी शहादत उनका बलिदान अजर-अमर हो गया। उनके बलिदान के कारण ही दिल्ली के लाल किले पर हमारा प्यारा तिरंगा आन-बान-शान से फहराता रहा। राष्ट्र हर क्षेत्र में उन्नति के पथ पर अग्रसर होने लगा।

इस बीच इतिहास करवटें बदलता रहा। सभी भारतीय अपने आप को स्वतंत्र अनुभव करते हुए हर्ष और उल्लास के वातावरण में जीवन यापन करने लगे। तब से लेकर अब तक गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र में बहुत सा पानी बह गया है। सन् 1962 में हिन्दी चीनी भाई-भाई के नारे लगाने वाने चीन ने हिमालय की हजारों वर्षों की शान्ति भंग कर भारतीय जवानों के उबलते खौलते लाल-लाल लहू से हिमालय की श्वेत बर्फीली चोटियों को रक्त रंजित कर दिया। फिर भी हमने इन सारी विपरीत परिस्थियों को सहन किया और उस लाल चीन का हाथ थामें रखा। क्योंकि तक्षशिला, नालंदा विश्वविद्यालयों के खंडहर हमें बता रहे थे कि कभी फाहियान, व्हेनसांग, इत्सिंग जैसे चीनी यात्री अपनी ज्ञान की प्यास बुझाने हेतु हमारे पास आए थे। इसी प्रकार हजारों विदेशी यहां आते रहे। इसलिए उन के मान सम्मान की खातिर वर्तमान तानाशाह लाल चीन की युद्ध की भभकी को सहन करना पड़ा।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमने राज्य विस्तार के लिए, मानव संहार के लिए, मानवीय सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान के विनाश के लिए कभी तलवार का सहारा नहीं लिया। कभी हिंसा को नहीं अपनाया। हमने सदैव शान्ति, प्रेम, सद्भावना, सहयोग, सहकार, अहिंसा और जीयो और जीने दो का अमर संदेश विश्व को दिया। ये मानवीय मूल्य हमारे जीवनाधार थे, हैं और रहेंगे।

हमारा ही अपना भाई अलग हुआ वह भी हमें आँख दिखा रहा है। भाई-भाई की तरह रहने की तहजीब वह नहीं सीख पाया। पड़ौसी देश के तानाशाह जनरल अय्यूब खान ने 1965 में दिल्ली के लाल किले तक पहुंचने का सपना देखा था। उसने सोचा था भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री पाक आक्रमण का प्रतिरोध नहीं कर पाएंगे पर लाल बहादुर शास्त्री का कद छोटा था पर उनका हौसला बुलंद था। इसलिए उन्होंने पाक को ईंट का जवाब पत्थर से दिया। भारतीय सेना ने लाहौर को घेर लिया और पाकिस्तान के हाजी पीर दर्रे पर अधिकार कर लिया। पाकिस्तान में त्राहि-त्राहि मच गई। वह सोवियत रूस के समक्ष गिडगिडाने लगा तथा उनसे समझौता करवाने के लिए प्रभाव बनाया। चूंकि सोवियत रूस हमारा विश्वस्त

शेष पृष्ठ 23 पर......

शिव पाटोत्सव

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति द्वारा

भगवान् भूतभावन के प्रथम वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित

श्री शिव महापुराण कथा एवं निःशुल्क ज्योतिष कर्मकाण्ड शिक्षा शिविर

दिनांक 4 फरवरी से 10 फरवरी 2025 ई. तक सानंद सम्पन्न

अक्षपाद महर्षि गौतम की छत्रछाया में श्री पुष्करराज की पावन धन्य धरा पर दिनांक 4 फरवरी से 10 फरवरी 2025 ई. पर्यन्त विविध धार्मिक कार्यक्रमों के साथ भगवान् साम्बसदाशिव का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव अतिशय आनंद एवं उत्साह के साथ मनाया गया।

इस शुभावसर पर तदंगभूत श्री शिव महापुराण कथा का वाचन अंतर्राष्ट्रीय कथा वाचक श्री प्रमोद जी नागर के मुखारविन्द से सुनने का सौभाग्य भक्तवृन्द को प्राप्त हुआ। दिनांक 4 फरवरी 2025 ई. को पुष्कर पूजन के साथ भव्य मंगलकलश यात्रा से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। एवं दिनांक 4 फरवरी से 10 फरवरी पर्यन्त प्रतिदिन अपरान्ह 2 बजे से 5 बजे तक कथा का कार्यक्रम चला। पूर्वाह्न में प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक घाटारानी वेद विद्यालय के विद्यार्थियों एवं आश्रमवासीय छात्रों द्वारा दैनिक शिव पूजन व सस्वर रुद्राष्टाध्यायी से रुद्राभिषेक सम्पन्न हुआ।

सायंकाल सुविधानुसार सामूहिक सुंदरकांड का पाठ भी भोलेनाथ के सान्निध्य में छात्रवृन्द ने किया। साथ ही ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड का शिक्षण प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

दिनांक 10 फरवरी 2025 को वैदिक विधि विधान से रुद्र यज्ञ के साथ विशाल भंडारे का आयोजन हुआ। आगन्तुकों के लिए भोजन प्रसाद की मुक्त व्यवस्था की।

कथा समापन के अवसर पर श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति द्वारा 'श्री प्रमोद जी नागर' का स्वागत करते हुए 'अभिनंदन पत्र' भेंट किया गया। श्री हनुमान् प्रसाद जी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष ने अपने उद्गार प्रकट किये। महामंत्री श्री बालकृष्ण जी शर्मा ने माला पहना कर एवं अध्यक्ष महोदय श्री सीताराम जी जोशी ने शॉल समर्पित कर व्यासपीठ पर व्यास जी का सम्मान किया।

श्री अध्यक्ष महोदय एवं महामंत्री जी ने ज्योतिष शिक्षार्थियों को 'प्रशस्ति पत्र' प्रदान किये। इस मंगलमय अवसर पर घाटारानी वेद विद्यालय, जहाजपुर के अध्यक्ष श्री रमेश चन्द्र जी गालरिया साहब ने भी पधार कर प्रसन्नता का अनुभव किया। आश्रम के चहुंमुखी विकास व आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आश्रम ने घाटारानी वेद विद्यालय को 21000 रु. भेंट किये।

श्री वेंकटेश प्रसाद जी, श्री गोरधन जी जोशी ने हवन कार्य में यज्ञमान की भूमिका निभाई। श्री दामोदर शास्त्री गुरुकृपा ट्रस्ट परिवार, श्री सोहनलाल जी जोशी, श्री एस.पी. गौतम, श्री अशोक जी तिवारी प्रभृति ट्रस्ट परिवार के सदस्यों व गणमान्य समाजबंधुओं की उपस्थिति रही।

संयोजक पं. प्रभुलाल शास्त्री ने छात्रों को ज्योतिष व कर्मकाण्ड के सारभूत विषयों का अध्ययन करवाया। भगवत् कृपा से प्रथम वार्षिक पाटोत्सव, श्री शिव महापुराण कथा एवं 'ज्योतिष कर्मकाण्ड शिक्षा शिविर' प्रभृति कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुए।

- पं. प्रभुलाल शास्त्री
ट्रस्टी (पाली)

सत्य और असत्य

एक दिन छाया ने मनुष्य से कहा - 'लो देखो, तुम जितने थे, उतने-के-उतने ही रहे और मैं तुम से कई गुनी बढ़ गयी।'

मनुष्य मुसकुराया और बोला - 'सत्य और असत्य में यही तो अन्तर है। सत्य जितना है, उतना ही रहता है और असत्य पल-पल में घटता-बढ़ता रहता है।'

आषाढ़ी पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा मनाने का रहस्य

गुरु पूर्णिमा अर्थात अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर की यात्रा और व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक स्वाभिमान जाग्रत कराने वाले परम् प्रेरक के लिये नमन् दिवस। जो हमें अपने आत्मवोध, आत्मज्ञान और आत्म गौरव का भान कराकर हमारी क्षमता के अनुरूप जीवन यात्रा का मार्गदर्शन करें वे गुरु हैं।

वे मनुष्य भी हो सकते हैं, और कोई प्रतीक भी। संसार में कोई अन्य प्राणी भी, ज्ञान दर्शन कराने वाला कोई दृश्य, कोई घटना, कोई ग्रंथ या ध्वज जैसा भी कोई प्रतीक हो सकता है। अपने ज्ञान दाता के प्रति आभार और उनके द्वारा दिये गये ज्ञान से स्वयं के साक्षात्कार करने की तिथि है गुरु पूर्णिमा।

आषाढ़ माह की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाने का भी एक रहस्य है। भारत में प्रत्येक तीज त्यौहार के लिये तिथि का निर्धारण साधारण नहीं होता, प्रत्येक तिथि का अपना संदेश होता है। गुरु पूर्णिमा की तिथि का भी एक संदेश है। इसका निर्धारण एक बड़े अनुसंधान का निष्कर्ष है। वर्ष में कुल बारह पूर्णिमाएँ आतीं हैं। इन सभी में केवल आषाढ़ की पूर्णिमा ऐसी है जिसमें चंद्रमा का शुभ्र प्रकाश धरती पर नहीं आ पाता या सबसे कम आता है। वर्षा के बादल चंद्रमा के प्रकाश का मार्ग अवरुद्ध कर देते हैं। एक प्रकार से चंद्रमा को ढंक लेते हैं। शुभ्र चंद्र-प्रकाश धरती पर आने का प्रयत्न तो करता है पर बादल अवरोध बन जाते हैं।

यदि गुरु का संबंध केवल ज्ञान और प्रकाश से होता तो आश्विन मास की शरद पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा माना जा सकता था। चूँकि इस पूर्णिमा को धरती पर आने वाला चन्द्र प्रकाश सबसे धवल और मोहक होता है। लेकिन इसके ठीक विपरीत आषाढ़ की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा माना गया। इसका संदेश ज्ञान पर आने वाली भ्रान्तियों को दूर करना है।

आषाढ़ की पूर्णिमा पर चन्द्र प्रकाश को रोकने वाले बादल स्थाई नहीं होते, वह अवरोध मौलिक नहीं होता, कृत्रिम होता है, अस्थाई होता है, जो समय के साथ छंट जाता है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य की आँखो पर अज्ञान के बादल छाये रहते हैं। भीतर आत्मा तो परमात्मा का अंश है, जो ज्ञान और प्रकाश का पुंज है। पर मनुष्य का अज्ञान, अशिक्षा और भ्रांत धारणाओं की परतें आत्मा को ढक लेती हैं। जिससे मनुष्य की प्रगति अवरुद्ध होने लगती है और उसके कुमार्ग पर चलने की आशंका हो जाती है।

जिस प्रकार पवन देव बादलों को उड़ा ले जाते हैं धरती और चन्द्रमा के बीच का अवरोध समाप्त कर देते हैं, और शुभ्र चंद्र प्रकाश पृथ्वी की मोहक छवि को पुनः उभारने लगता है उसी प्रकार मनुष्य के ज्ञान बुद्धि पर पड़े अवरोध स्वयं नहीं हटते, उन्हे हटाने के लिये कोई प्रयत्न चाहिए, कोई निमित्त चाहिए। जो अज्ञान की परत का क्षय करके स्वज्ञान का भान करा सके। अज्ञान का हरण कर स्वज्ञान के इस जाग्रत कर्ता को ही गुरु कहा गया है। यह गुरु की विशेषता होती है कि अज्ञानता के अंधकार की ये सभी परतें हटा कर उसे उसके स्वत्व से साक्षात्कार कराता है। मनुष्य की विशिष्टता को नये आयाम, नयी ऊँचाइयाँ देने में मार्ग दर्शन करता है। आषाढ़ की पूर्णिमा इसी का प्रतीक है।

शिक्षक और गुरु में अंतर

गुरुत्व परंपरा में एक बात महत्वपूर्ण है। शिक्षक, आचार्य, गुरु और सद्‌गुरु में अंतर होता है। शिक्षक और आचार्य गुरु तुल्य तो होते हैं पर गुरु नहीं होते। एक तो शिक्षक अस्थाई होते हैं और वे केवल निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार चलते हैं। शिक्षा और ज्ञान में अंतर है। शिक्षा केवल सैद्धांतिक होती है। यदि पाठ्यक्रम में कुछ असत्य है आधारहीन है तब भी शिक्षक उसी अनुसार अपना कार्य करते हैं। जबकि आचार्य इस पाठ्यक्रम में व्यवहारिक पक्ष को भी सम्मिलित कर व्यक्तित्व निर्माण पर भी ध्यान देते हैं।

लेकिन गुरु इनसे बहुत आगे हैं। वे पहले शिष्य की प्राकृतिक प्रतिभा क्षमता रुचि का आकलन करते हैं, उसकी मौलिक प्रतिभा को जाग्रत करते हैं। फिर उसके अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्धारण करते हैं। युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन तीनों थे तो एक ही कक्षा में पर गुरु द्रोणाचार्य ने तीनों को उनकी प्रतिभा और क्षमता के अनुरूप अलग-अलग अस्त्र शस्त्र में प्रवीण बनाया।

गुरू सदैव अपने शिष्य की रुचि और प्राकृतिक क्षमता को ध्यान में रखकर शिक्षा और ज्ञान दोनों का निर्धारण

करता है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से केवल चेहरे की बनावट, बोली, रुचि, पसंद नापसंद या डीएनए में ही अलग नहीं होता। वह प्राकृतिक विशेषताओं में भी पूरी तरह अलग होता है, विशिष्ट होता है। प्रकृति ने प्रत्येक व्यक्ति को उसकी प्रतिभा में विशिष्ट बनाया है। व्यक्ति की यह मौलिक प्रतिभा क्या है, क्षमता क्या है, मेधा क्या है और प्रज्ञा कैसी है। इसका आकलन गुरु करते हैं और उस व्यक्ति को उसके मूल तत्व का आभास कराते हैं, उसके स्वत्व से साक्षात्कार कराते हैं। जिससे वह अपने जन्म जीवन को योग्य बनाता है।

गुरु केवल लौकिक जगत के ज्ञान विज्ञान तक रहते हैं। एक शिष्य संसार में कैसे श्रेष्ठ बने, संसार में कहाँ क्या है। संसार की प्रकृति, प्राणी और पदार्थ सबसे कैसे तादात्म्य स्थापित हो यह सब ज्ञान गुरु देते हैं। लेकिन सद्‌गुरु लौकिक और अलौकिक दोनों का मार्ग दर्शन कराते हैं। संसार के आगे क्या है? दृश्य जगत के आगे अदृश्य की शक्ति क्या है। यह ज्ञान सद्‌गुरु से मिलता है। अर्जुन के गुरु द्रोणाचार्य हैं। पर जब योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया तब अर्जुन ने कहा- ''मुझे सद्‌गुरु की भाँति उपदेश करें'' और तब ही भगवान श्रीकृष्ण ने विभूति और विराट से परिचय कराया।

इस प्रकार संसार में जीने योग्य बनाने, सफलता प्राप्त करने, लौकिक जगत को समझने और अलौकिक जगत का साक्षात्कार कराने वाली विभूति को गुरु कहा गया और उनके प्रति आभार प्रकट करने की तिथि है गुरु पूर्णिमा।

गुरु पूजन परंपरा का आरंभ

इस दिन शिष्य अपने गुरु की अभ्यर्थना करते हैं, वंदना करते हैं। यह एक प्रकार का पूजन है। गुरु पूजन की यह परंपरा कब से आरंभ हुई यह नहीं कहा जा सकता है। भारतीय वाङ्मय में पीछे जितनी दृष्टि जाती है वहाँ गुरु परंपरा के आख्यान मिलते हैं।

परम् गुरु भगवान् शिव को माना गया है। आदि गुरु महर्षि कश्यप, महर्षि भृगु, देव गुरु बृहस्पति और दैत्य गुरु शुक्राचार्य माने गये हैं। इसके बाद विभिन्न ऋषियों राजकुलों के गुरु के रूप में उल्लेख मिलता है। राजकुलों में बीच-बीच में गुरु बदले भी हैं। यह वर्णन भी पुराणों में है।

पौराणिक आख्यानों में केवल गुरु परंपरा का ही उल्लेख नहीं अपितु ऋषियों की ज्ञान सभा होने के भी उल्लेख हैं। आरंभिक काल में ऐसी ज्ञान सभाएं शिव निवास कैलाश पर्वत पर होती थीं। जिनमें ऋषिगण भाग लेते थे, वे शिवजी के सामने समाज की स्थिति का चित्रण करते थे फिर भगवान् शिव समाधान सूत्र दिया करते थे। इसके बाद ऐसी ज्ञान सभाएं काशी में होने लगीं। ये सभाएं भी शिवजी के सभापतित्व में ही होतीं थीं। इसलिये भगवान शिव को ही आदि गुरु या परम् गुरु कहा गया है। आगे चलकर इन समाजों का केन्द्र नैमिसारण्य बना। यहाँ आचार्य प्रमुख महर्षि भृगु थे और यहीं से सभापतित्व का दायित्व ऋषियों के हाथ में आया।

इन सभाओं का सप्त ऋषियों में से कोई अथवा उनके द्वारा आमंत्रित कोई अन्य प्रमुख ऋषि द्वारा सभापतित्व करने की परंपरा आरंभ हुई। ये सभाएं चातुर्मास की पूरी अवधि में हुआ करतीं थीं जो आषाढ़ की पूर्णिमा से आरंभ होकर शरद पूर्णिमा तक निरंतर चला करतीं थीं। इसलिये आज भी गुरु परंपरा के प्रत्येक संत इस अवधि में अपने मूल आश्रम में ही निवास करते हैं।

नेमीसारण्य की इस ज्ञान सभा परंपरा के शिथिल होने के बाद क्षेत्रीय सभाओं की परंपरा आरंभ हुई और इसी के साथ स्थानीय स्तर पर गुरु वंदन पूजन आरंभ हुआ। यद्यपि शंकराचार्य पीठ, महामंडलेश्वर पीठ आदि प्रमुख गुरु स्थानों पर आज भी चातुर्मास में निरंतर व्याख्यान होने की परंपरा है।

पुराणों में आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु महत्ता स्थापना का पहला विवरण त्रेता युग के आरंभ में मिलता है। इसी तिथि को भगवान् शिव ने नारायण के अवतार भगवान् परशुराम जी को शिष्य के रूप में स्वीकार किया था। भगवान् शिव के भक्त तो सभी हैं पर शिष्य अकेले परशुराम जी। और इसी तिथि से भगवान् अमरनाथ के दर्शन आरंभ होने की परंपरा भी बनी। वशिष्ठ परंपरा में इस तिथि को महर्षि व्यास का जन्म हुआ जिन्होंने वेदों का भाष्य तैयार किया। इस प्रकार इस तिथि का महत्व बढ़ता गया।

गुरु के प्रतीक : प्राणी, प्रकृति, ग्रंथ और ध्वज

आरंभिक काल में गुरु परंपरा के वाहक अधिकाँश ऋषिगणों का उल्लेख मिलता है, पर समय के साथ इसका विस्तार हुआ। गुरु केवल ऋषि ही बनें अथवा जीवन में केवल एक ही गुरु हों यह बंधन कभी नहीं रहा। एक से अधिक गुरु और ऋषियों से इतर किसी प्रतीक या घटना को

भी गुरु मानने की परंपरा रही है। यहाँ तक कि पशु पक्षी और सेवक के अतिरिक्त कोई प्रतीक जैसे यज्ञ, ग्रंथ और ध्वज को भी गुरु मानने की परंपरा आरंभ हुई। भगवान् दत्तात्रेय जी के चौबीस, भगवान् परशुराम जी के सात और राजा जनक के तीन गुरु होने का वर्णन मिलता है। भगवान् दत्तात्रेय की चौबीस गुरु संख्या में पृथ्वी, जल, अग्नि आकाश भी हैं। उन्होंने मधु मक्खी, श्वान् आदि उन पशु पक्षियों को भी अपना गुरु माना जिनसे उन्होंने कार्य संकल्प की सीख लेने का संदेश दिया।

दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने अपने पिता महर्षि भृगु के साथ यज्ञ को भी गुरु माना। राजा जनक के तीन गुरु संख्या में प्रतीक के रूप में वेद भी गुरु हैं आगे चलकर राजा जनक ने अन्य राजाओं को वेदज्ञान दिया। ऋषिका देवहूति ने अपने पुत्र कपिल मुनि को गुरु रूप में स्वीकारा तो ऋषि कहोड़ ने अपने पुत्र अष्टावक्र को गुरु समान आदर दिया। आदि शंकराचार्य जी ने एक चाँडाल को गुरु समान आदर दिया और पंचकर्म की रचना की। स्वामी विवेकानंद ने खेतड़ी की नृत्यांगना को माँ कहकर पुकारा और गुरु का सम्मान दिया। इसी परंपरा के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने 'ध्वज' को गुरु रूप में स्वीकारा। संघ स्वयं सेवक गुरु पूर्णिमा पर ध्वज का ही पूजन करते हैं। संघ की स्थापना के तीन वर्ष बाद ध्वज पूजन की यह परंपरा आरंभ हुई।

भारत में यह ध्वज पूजन परंपरा पहली नहीं है। भारत में अनादि काल से ध्वज को सम्मान का प्रतीक माना और इसकी रक्षा के लिये प्राणोत्सर्ग करने की घटनाओं से प्राचीन ग्रंथ भरे पड़े हैं। ध्वज नायक या राज्य की पहचान का प्रतीक थे, जैसे गरुड़ ध्वज नारायण की, अरुण ध्वज सूर्य की पहचान रहे हैं।

ध्वज को राष्ट्र के प्रतीक के रूप में वंदन करने की परंपरा आचार्य चाणक्य के समय आरंभ हुई। आचार्य चाणक्य ने भगवा ध्वज को भारत राष्ट्र की पहचान और मान का प्रतीक प्रमाणित किया। ज्ञान के लिये शब्द और स्वर के साथ प्रतीक भी माध्यम होते हैं।

उसी प्रकार व्यक्ति, परिवार समाज और राष्ट्र संस्कृति के स्वत्व की पहचान का प्रतीक ध्वज होता है । गरुड़ ध्वज से नारायण और अरुण ध्वज से सूर्य की पहचान होती है उसी प्रकार भगवा ध्वज भारत राष्ट्र की पहचान है। भगवा अग्नि शिखा का रंग होता है, सूर्योदय की आभा ऊषा का रंग होता है जो समता समानता का द्योतक होता है। अग्नि सभी को एकसा ताप देती है। सूर्य सबको समान प्रकाश और ऊर्जा देता है। इसलिए भारत ने अपनी ध्वजा का रंग भगवा स्वीकार किया। स्वाभिमान के जागरण का प्रतीक शब्द 'ध्वज' संस्कृत की 'ध्व' धातु से बनता है। इसका आशय धरती की केन्द्रीभूत शक्ति होता है। इसे धारण करने के कारण ही ऋग्वेद में धरती के लिये 'धावा' उच्चारण आया है। भगवा ध्वज भारत राष्ट्र का प्रतीक है इसकी कोई राजनैतिक अथवा क्षेत्र विशेष की सीमा नहीं है। यह शिक्षा संस्कार, सात्विकता और स्वाभिमान का प्रतीक है।

भारत ने पूरी धरती के निवासियों को एक कुटुम्ब माना। इसलिए भारत ने कभी भी, किसी भी युग में राजनैतिक या साम्राज्य विस्तार के लिये कोई युद्ध नहीं किया। जो युद्ध हुए वे सुरक्षा के लिये हुए अथवा धर्म, नैतिकता और संस्कृति की रक्षा के लिए हुए वह भी आक्रामक नहीं केवल सुरक्षात्मक।

ये युद्ध भी तब हुए जब शाँति के सभी मार्ग अवरुद्ध हो गये। इन युद्धों में सिद्धांत स्वाभिमान के साथ ध्वज का सम्मान सर्वोपरि रहा। ध्वज भूमि पर न गिरे इसके लिये कितने लोगों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ दीं हैं यह हमने दाशराज युद्ध, राम रावण युद्ध, महाभारत युद्ध से लेकर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी देखा।

ध्वज किसी भी राष्ट्र और संस्कृति के गौरव और सम्मान का प्रतीक माना गया है। इससे आत्मगौरव और स्वाभिमान का भी वोध होता है। यह राष्ट्र और स्वाभिमान वोध ही है जो व्यक्ति को स्वत्व सम्मान की स्थापना के लिये प्रेरित करता है। यह बात आचार्य चाणक्य ने कही थी और इसी को आगे बढ़ाया राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने। उन्होंने कहा था 'जो आत्मवोध कराये वह गुरु है, मनुष्य या प्राणी का जीवन तो सीमित होता है। समय और आयु अवस्था उनकी क्षमता और ऊर्जा को प्रभावित करती है, अतएव गुरु चिरजीवी होना चाहिए'।

अष्टावक्र से मिले आत्मज्ञान के बाद इसी भाव के अनुरूप राजा जनक ने वेद को भी गुरु तुल्य आसन दिया।

गुरुग्रंथ साहिब को गुरु स्थान का सम्मान देना इसी परंपरा का पालन है। लेकिन वर्तमान परिस्थिति में जितनी आवश्यकता आत्मज्ञान की है उससे अधिक आवश्यकता स्वत्व के वोध और राष्ट्र के स्वाभिमान जागरण की है। उधार के सिन्दूर से कोई सौभाग्यवती नहीं हो सकती, वैशाखियों के सहारे कोई पर्वत की चोटी पर नहीं जा सकता उसी प्रकार कोई व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र अपने स्वत्व से दूर होकर प्रतिष्ठित नहीं हो सकता।

यह भगवा ध्वज प्रत्येक भारतीय को उसके स्वत्व और स्वाभिमान का वोध कराता है। व्यक्तिगत ज्ञान के लिये किन्हीं ऋषि तुल्य विभूति से दीक्षा लेना आवश्यक है पर राष्ट्र स्वाभिमान जागरण कर्ता के रूप में ध्वज के अतिरिक्त कोई प्रतीक नहीं हो सकता। आज जीवन की आपाधापी है। भौतिक सुख सुविधाओं के संघर्ष में आत्मगौरव कहीं छूट रहा है। इसके लिये आवश्यक है कि गुरु पूर्णिमा पर केवल गुरु वंदन पूजन तक सीमित न रहें। प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक बार आत्म चिंतन अवश्य करे स्वयं के बारे में, अपने परिवार के बारे में, अपनी परंपराओं के बारे में और अपने राष्ट्रगौरव के बारे में और यदि कहीं चूक हो रही है तो उसकी पुनर्प्रतिष्ठा कैसे की जाये इसका संकल्प लिया जाय तभी गुरु पूर्णिमा पर गुरु वंदन पूजन सार्थक होगा।

– अज्ञात से साभार

आश्रम व्यवस्था में सन्यास आश्रम

सन्यास यानी सम्यक रूप से न्यास की भावना। जब व्यक्ति दुनिया को भोग भाव से न देख कर न्यास भाव से देखने और व्यवहार करने लगता है तब वह सन्यासी हो जाता है। सन्यासी वह होता है जो इस दुनिया में रहता है लेकिन उसका भोक्ता बनकर नहीं बल्कि उसका द्रष्टा और संरक्षक बनकर, क्योंकि वह इसके लौकिक और पारलौकिक दोनों स्वरूपों को समझ चुका होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कहते हैं –

अनाश्रित: कर्मफलं कार्यं कर्म करोति य:।
स सन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रिय:।

(गीता – 6 / 1)

अर्थात जो पुरुष कर्मफल पर आश्रित न होकर कर्तव्य कर्म करता है, वह सन्यासी और योगी है, न कि वह जिसने केवल अग्नि का और क्रियायों का त्याग किया है।

यथार्थ यह है कि सन्यास मानव चेतना के विकास का चरमोत्कर्ष है। एक मानव के रूप में जन्म लिए हुए जीव की विकास यात्रा की अन्तिम परिणति है। पूर्व जन्म के प्रारब्ध के कारण जन्मना विरक्त को छोड़ कर, न तो भगवा लपेट कर और न ही किसी के द्वारा शिखा और सूत्र का त्याग कर इस अवस्था तक अकस्मात् नहीं पहुंचा जा सकता। चार आश्रम के रूप में इसकी एक सम्यक प्रक्रिया है जो मनुष्य को क्रमश: उत्क्रमित कर उसकी चेतना को सन्यास अवस्था तक ले जाती है। यह प्रक्रिया ही ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास चार आश्रम है।

ब्रह्मचर्य आश्रम आगे तीनों आश्रमों का आधार है। एक अच्छा ब्रह्मचारी ही एक अच्छा गृहस्थ बन सकता है और उसके दायित्वों का ऐसा सम्यक निर्वहन कर सकता है कि व्यक्ति अपने भोगों से तृप्त होकर वानप्रस्थ की अवस्था में पहुंच सके। यदि सम्यक प्रकार से गृहस्थ जीवन को नहीं जिया गया तो भोगों से तृप्त नहीं हुआ जा सकता। इसी प्रकार वानप्रस्थी भी भलीभांति अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन कर अन्तत: सभी भोगों से मुक्त होकर बिना किसी फल की कामना के कर्त्तव्य कर्मों का निर्वहन करते हुए सन्यास अवस्था को प्राप्त करता है।

एक निश्चित वय के अनुसार यदि आश्रमों के अनुकूल मानस नहीं तैयार होता तो मनुष्य कष्ट का भागी बनता है। यदि वृद्धावस्था में भी भोग का भाव बना रहा लेकिन इन्द्रियाँ साथ न दे रही हों तो व्यक्ति का जीवन कष्टमय हो जाता है। आश्रम के अनुसार चेतना के धरातल पर उत्क्रमित व्यक्ति अपने जीवन के अंत तक आनन्दित रह सके इसका विधान ही वैदिक आश्रम धर्म है।

आज–कल अतृप्त भोग से दूषित चेतना युक्त आश्रम भ्रष्ट लोगों के विषय में जानकर ऐसा लगता है कि यदि ये लोग आश्रम धर्म का सम्यक पालन किए होते तो समाज के लिए अधिक उपयोगी बन सकते।

❑❑❑

अटल मृत्यु से भय कैसा !!

एक छोटा-सा गाँव था। उसमें एक ब्राह्मण कुटुम्ब रहता था। ब्राह्मण अत्यन्त दरिद्र था। दिनभर भीख माँगते रहने पर भी उसके कुटुम्ब का भरण-पोषण अच्छी तरह नहीं हो पाता था। पूरे कुटुम्ब ने पेट भरकर खाया हो, ऐसा दिन बिरला ही होता।

एक दिन खूब सवेरे ब्राह्मण जग गया। वह बिछौने से उतने का विचार कर ही रहा था कि उसने देखा कि छप्पर के जाले में कुछ रेंग रहा है। उसने नजर गड़ाकर देखा तो उस जाले में से सर्प निकलता और दिवाल से नीचे उतरता दिखायी दिया। साँप ने नीचे उतरकर ब्राह्मण की पत्नी को डँसा और फिर उसके तीनों लड़कों को भी डँस लिया। डँसकर वह घर से बाहर निकलकर जाने लगा।

ब्राह्मण ने विचार किया कि जाले में तो सर्प था ही नहीं, फिर वह सर्प कहाँ से आया ? फिर, सर्प ने बिना ही दबे-दबाये एक ही साथ सोये हुए मनुष्यों को कैसे डँस लिया। अतएव यह कोई साधारण सर्प नहीं है, इसलिये इसका पता लगाना चाहिये। यह विचारकर वह स्वयं सर्प के पीछे-पीछे चल पड़ा।

सर्प दरवाजे के नीचे से निकलकर बाहर चला गया और ब्राह्मण भी दरवाजा खोलकर उसके साथ हो लिया। देखते-ही-देखते वह साँप एक भयंकर साँड़ के रुप में बदल गया और सामने से आते हुए एक मनुष्य को सींग से मारकर समाप्त कर दिया। यों उस मनुष्य को मारकर साँड़ ने अपना रूप बदला और वह एक बिच्छू बन गया। इस रूप में उसने गली में खेलते हुए एक बच्चे को काटकर उसके प्राण ले लिये।

इस काम को पूरा करके बिच्छू ने अब एक मेढ़े का रूप धारण किया और सींग मारकर एक बालक का वध कर डाला। फिर वह मेढ़ा जंगल की और दौड़ा और एक बावली के पास पहुँचते ही सुन्दर युवती बनकर बावली के किनारे बैठ गया।

रास्ते में दो सगे भाई जा रहे थे। वे पुलिस में नौकरी करते थे और घर के काम के लिये छुट्टी लेकर अपने घर जा रहे थे। दोनों की दृष्टि उस युवती पर पड़ी और दोनों के ही मनों में उसे प्राप्त करने की इच्छा जाग उठी। बड़े भाई ने कहा कि वह मेरी है और छोटे ने कहा - मेरी। वे ज्यों-ज्यों उस स्त्री के समीप पहुँचते गये, त्यों-ही-त्यों उनकी कामना अधिक-से-अधिक बढ़ने लगी। कामना का परस्पर अवरोध होने से उन्हें क्रोधावेश हो आया। विवेक छोड़कर वे आपस में तू-ताँ करने लगे और परस्पर गालियाँ बकने लगे। परिणाम यह हुआ कि दोनों ने तलवार खींच ली और लड़ते-लड़ते दोनों भाई मौत के घाट उतर गये।

इस कार्य को पूरा करके वह स्त्री वहाँ से उठी और जमीन पर सो गयी तथा लोटने लगी। देखते-ही-देखते स्त्री अदृश्य हो गयी और उसकी जगह एक बड़ा साँप दिखायी दिया। सर्प बड़े वेग से नदी की तरफ चला। नदी के पास पहुँचकर वह जल में उतर गया। नदी के बीच में एक नाव जा रही थी, साँप उसके पास पहुँचकर उस पर चढ़ने लगा। सर्प को देखते ही नाव के मुसाफिर भय के मारे इधर-उधर दौड़ने लगे, नाव का वजन एक तरफ बढ़ गया और वह नदी में उलट गयी। सब मुसाफिर डूबकर मर गये।

इस को पूरा करके सर्प वापस लौटा और जमीन पर आकर एक पण्डित के रूप में बदल गया। वे सफेद दूध-से वस्त्र पहने हुए, गले में दुपट्टा डाले और सिर पर बड़ी पगड़ी पहने था। उन्होंने पगड़ी में एक सुन्दर पंचांग खोंसा था।

इस स्वरूप को देखते ही ब्राह्मण उसके चरणों पर गिरकर उसके चरण पकड़ लिये। पण्डित ने उसका हाथ पकड़कर उठाया। तब ब्राह्मण ने उससे पूछा- 'आप कौन हैं और यह क्या लीला कर रहे हैं, कृपा करके मुझे बताइये।' पण्डित जी ने कहा - 'इतने समय से तुम मेरे पीछे-पीछे चले आ रहे हो और मैंने जो कुछ किया, सब तुमने अपनी आँखों से देखा है, फिर भी तुमने मुझको पहचाना नहीं ?' ब्राह्मण ने सिर हिलाकर अपनी असमर्थता बतायी और समझाकर बताने के लिय पुनः पण्डित जी से प्रार्थना की। तब पण्डित जी ने कहा -

'देखो, मैं काल हूँ, प्राणियों के स्थूल शरीरों का नाश

करने का काम ईश्वर ने मुझको सौंपा है, परन्तु मैं स्वयं कुछ भी नहीं करता। जब किसी भी प्राणी का प्रारब्ध भोग समाप्त होता है, तब उसकी मृत्यु के लिये निमित्त उपस्थित कर देना-इतना ही मेरा काम है। मनुष्य तो निमित्त को ही दोष देता है, पर वास्तव में ऐसी बात नहीं है। मृत्यु तो प्रारब्ध क्षय होने पर ही होती है। पर सच्ची समझ न होने से मनुष्य कहता है कि 'अमुक साँप काटने से मर गया, अमुक साँड़ के सींग मारने से मर गया, अमुक बिच्छू काटने से मर गया।' आदि-आदि। मृत्यु के समय से एक श्वास भी पहले किसी को कोई नहीं मार सकता। इसी प्रकार जीवनकाल से अधिक एक श्वास आने के समय भर भी कोई किसी को जिला नहीं सकता।'

यह सुनकर ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कालभगवान् से कहा - 'आपके दर्शन हुए है, अतएव कृपा करके बताइये, मेरी मृत्यु कब और किस निमित्त से होगी ?'

कालभगवान् ने कहा - 'मृत्यु का समय बतलाने का मुझे अधिकार नहीं है, परन्तु इतना बतला देता हूँ कि तुम्हारी मृत्यु मगर के निमित्त से होगी। अब यहाँ से तुम उत्तर की ओर जाओ, वहाँ तुम्हारा भाग्य खुलेगा।' इतना कहकर कालभगवान् वहीं अन्तर्धान हो गये।

वह कालभगवान् के कथनानुसार उत्तर दिशा की ओर चल दिया। चलते-चलते एक राजधानी का शहर आया। उसने उसमें प्रवेश किया। वहाँ के राजा को सन्तान न होने के कारण कोई भी नया ब्राह्मण या ज्योतिषी शहर में आता है तो राजा उसे अपने घर बुलाते और उसका सम्मान करके सन्तान प्राप्ति के लिये प्रार्थना करते।

राजा ने इस ब्राह्मण को भी बुलाया। इसने तुरंन्त ही आशीर्वाद दिया कि 'आज से ग्यारह माह के अन्दर आपको अवश्य पुत्र होगा। ' ऐसे दृढ़तापूर्ण वचन सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने ब्राह्मण के रहने के लिये उनके योग्य सब व्यवस्था करवा दी।

दैव को करना था, यथा समय राजा को पुत्र हो गया। इससे ब्राह्मण का मान बहुत ही बढ़ गया। राजा ने उसको कुल पुरोहित के रुप में सदा के लिये रख लिया और ब्राह्मण वहाँ सुखपूर्वक अपना जीवन बिताने लगा।

समय बीतने पर राजकुमार बड़ा हुआ और उसके अध्ययन का काम भी कुलपुरोहित को ही सौंपा गया, इसलिये सदा साथ रहने के कारण दोनों में प्रगाढ़ प्रेम हो गया। कुमार जब बारह वर्ष का हुआ, तब उसका यज्ञोपवीत संस्कार कराना निश्चत हुआ।

मेरी मृत्यु मगर के निमित्त से होगी, इस बात को ब्राह्मण जानता था, इसलिये उसने नियम बना रखा था कि नदी, तालाब या कुएँ आदि पर किसी भी कारण से न तो जाना और न वहाँ स्नान करना।

गायत्री मंत्र देते समय गुरु-शिष्य दोनों को नदी में खड़े रहना चाहिये, अतः ब्राह्मण ने कहा कि 'मुझसे यह नहीं होगा। मन्त्र दूसरे पण्डित दे देंगे।' परन्तु राजकुमार ने हठ पकड़ लिया 'मैं तो आपसे ही मन्त्र लूँगा, नहीं तो यज्ञोपवीत ही नहीं लूँगा।'

राजा ने पुरोहित को एकान्त में बुलाकर पूछा और कहा कि राजकुमार को मन्त्र देने में जितनी देर लगे उतनी-सी देर नदी में खड़े रहने में क्या हानि है, राजकुमार बालक है, हठी है और आपका उसके प्रति बड़ा स्नेह है। राजा ने जब बहुत आग्रह किया, ब्राह्मण ने स्पष्ट बतला दिया कि 'मेरी मृत्यु मगर से होने वाली है, इसलिये मैं किसी दिन भी जल में नहीं उतरता, इसके सिवा अन्य कोई कारण नहीं है।'

राजा ने कहा - 'अरे महाराज! इस घुटने भर जल में मगर कहाँ से आयेगा, तथापि आपके सन्तोष के लिये मैं आपके चारों तरफ नंगी तलवारों का पहरा लगा दूँगा, इतना ही नहीं, एक सिपाही दूसरे सिपाही से अड़कर खड़ा रहेगा। ऐसी व्यवस्था कर दूँगा कि मगर तो क्या, एक छोटी-सी मछली भी नहीं आ सकेगी।'

अन्त में ब्राह्मण ने स्वीकार कर लिया और वह राजकुमार के साथ नदी में उतर गया। चारों और पूरा पहरा था। एक मेढ़क को भी आने का अवकाश नहीं था। ब्राह्मण ने विधिवत् मन्त्रोपदेश दिया। इतनें में ही, वह राजकुमार मगर के रूप में बदल गया और घुटने भर पानी वाली नदी में वहाँ एक बड़ा गड्डा हो गया और ब्राह्मण को पकड़कर वह

मगर उस गड्ढे में चला गया।

यों चाहे जितनी सावधानी रखी जाय, परन्तु आयु पूरी होने पर मरना ही पड़ता है। हिरण्यकशिप ने मृत्यु न हो, इसके लिए इतनी सावधानी रखी थी और कैसे-कैसे वरदान प्राप्त किये थे। दस सिर वाले रावण ने भी मनुष्य के सिवा अन्य किसी के हाथ से मेरी मृत्यु न हो, यह वरदान प्राप्त किया था, क्योंकि उसे निश्चत था कि कोई भी मनुष्य तो मुझे मार ही नहीं सकता। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं। पर सभी को समय आने पर मौत के मुँह में जाना ही पड़ा। कोई भी देहधारी कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह सदा नहीं जी सकता, क्योंकि देह की मृत्यु का निर्णय तो उसके जन्म के साथ ही हो चुका होता है, अतएव आयु की मर्यादा पूरी होते ही प्राणी को शरीर छोड़ना ही पड़ता है।

इसलिये समझदार मनुष्य को न तो अपनी मृत्यु से डरना चाहिये और न किसी भी देहधारी की मृत्यु होने पर शोक ही करना चाहिये। – **कल्याण से साभार**

❑❑❑

पृष्ठ 15 का शेष.......

मित्र था इसलिए हमने मित्रता की रक्षा के लिए सोवियत रूस के आग्रह पर पाकिस्तान के साथ ताशकन्द समझैता किया। उन्हें विजित भू-भाग लौटा दिया। इस समझौते के कारण पाकिस्तान की नाक तो बच गई पर हमारे लाड़ले जय जवान, जय किसान नारे के उद्घोषक प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को गहरा सदमा लगा और उनका प्राणान्त हो गया। अपने प्राणों की बलि देकर भी उन्होंने पवित्र मित्रता एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा की।

प्रदीप जैसे अमर गीतकारों सरस्वती पुत्रों के गीत हमारा उत्साहवर्धन करते रहे हैं। ऐसे गीतों ने सदा भारतीयों का साहस हिम्मत और हौसला बढ़ाया है। हमने 1965 में ताशकन्द समझौते में पड़ौसी राष्ट्र को आत्म चिंतन कर सुधरने का अवसर दिया था पर वह नहीं सुधर पाया। फूल का स्वभाव अपनी मधुर सुगंध से लोगों में प्रसन्नता का संचार करना है जबकि काँटे का स्वभाव चुभ कर लोगों को लहूलुहान कर देना होता है। यही बात हमारे पड़ौसी पर लागू होती है। उसने तो पूर्वी पाकिस्तान की तरफ तोपों के मुहं खोल दिए। भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पूर्वी पाकिस्तान के नागरिकों के रक्षार्थ भारतीय सेना को जवाबी कार्यवाही का आदेश दिया। भारतीय सेना ने 14 दिन में युद्ध को परिणाम तक पहुंचा दिया। महाभारत तो 18 दिन तक लड़ा गया था पर यह युद्ध मात्र 14 दिन में समाप्त हो गया। लोग इतिहास बदलते हैं पर हमने भूगोल बदल दिया। विश्व के मानचित्र में बंगलादेश नामक एक नये राष्ट्र का उदय हुआ। बंगलादेश के नेता बंग बन्धु मुजिबुर्रहर्मान शेख को राष्ट्रपति पद की शपथ आम के पेड़ के नीचे भारतीय वायु सेना की निगरानी में दिलाई गई। सारा विश्व इस दृश्य को देख रहा था। आखिरकार भारत को अपने वास्तविक विराट स्वरूप का दर्शन कराना पड़ा। इतना ही नहीं भारतीय सेना ने पाक सेना के लगभग एक लाख सैनिकों को बन्दी बनाया। ऐसा उदाहरण विश्व इतिहास में कहीं नहीं मिलता । फिर भी पहले ताशकन्द समझौता और इस बार शिमला समझौता के अनुसार पाक को एक आदर्श मित्र बनकर रहने का फिर अवसर दिया। पर अफसोस हमारे पड़ौसी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। वह कभी भारतीय संसद पर हमला करवाता है तो कभी मुम्बई की ताज होटल पर आक्रमण से नरसंहार करता है। अब हमारे धैर्य की सीमा समाप्त हो रही है। हमारे कर्णधारों को कुछ सोचना होगा और करना होगा। हम किसी को छेड़ते नहीं है पर कोई हमें छेड़ता है तो हम उसे छोड़ते नहीं है। यह बात पड़ौसी को समझ लेनी चाहिए।

दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से आज भी यह आवाज गूंज रही है –

''ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी। जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी ॥''

– **सीताराम जोशी**

अध्यक्ष, श्री पुष्कर गौतमाश्रम

मनुष्य जीवन का ध्येय

मनुष्य जीवन का ध्येय विश्व का कल्याण ही होना चाहिए। यही सनातन विचारधारा भी है।जब तक दूसरे सुखी नहीं होंगे हम सुखी नहीं हो सकते। इसलिए सब सुखी हों, सब स्वस्थ हों, सबका कल्याण हो।

हमारे धर्म ग्रन्थों में कहा भी गया है –

सर्वे भवन्तु सुखिन:

जीवन का ध्येय अनेक शब्दों में कहा जा सकता है। जैसे स्वतन्त्रता, मुक्ति, ईश्वरप्राप्ति, दु:खनाश, यश, वैभव, सुख आदि ।

अगर व्यापक और गहराई से विचार किया जाय तो किसी भी ध्येय से मानव–जीवन सफल हो सकता है, फिर भी जब तक ध्येय और उपध्येयों को ठीक तौर से न समझ लिया जाय मनुष्य के गुमराह होने की काफी आशंका रहती है ।

इसलिए अंतिम ध्येय और उसे पाने के लिये जिस जिस बात को पहले प्राप्त करना आवश्यक हो वह उपध्येय अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। ध्येय और उपध्येय में जहां विरोध हो वहां उपध्येय को छोड़कर ध्येय को अपनाना चाहिए।

ध्येय के लिये उपध्येय है इसलिये उपध्येय को ध्येय की कसौटी पर कसते रहना चाहिये । उपध्येय के लिये हम पूछ सकते हैं कि वह किसलिये, पर ध्येय के लिये यह पूछने की जरूरत नहीं होती।

एक आदमी नौकरी करता है तो हम पूछ सकते हैं, नौकरी किसलिए? उत्तर मिलेगा – पैसे के लिये। पैसा किस लिये ? रोटी के लिये। रोटी किस लिये ? जीवन के लिये। जीवन किस लिये ? सुख के लिये। इसके बाद प्रश्न समाप्त है । सुख किसलिये यह नहीं पूछा जाता। इसलिये सुख अन्तिम ध्येय कहलाया।

परन्तु यहां सुख का मतलब क्षणिक सुख और अपना ही सुख नहीं। जब तक दूसरे भी सुखी नहीं रहेंगे हमारा सुख भी बेकार होगा। हमारे वेदों, उपनिषदों तथा ऋषियों, मुनियों ने हमेशा विश्व कल्याण के लिये ईश्वर से कामना की और 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उपदेश दिया –

''सर्वे भवन्तु सुखिन:,सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दु:खभाग्भवेत्।''
।। ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥

सब सुखी हों, सब स्वस्थ हों, सब का कल्याण देखें, किसी को किसी तरह का दु:ख न हो।

तथा

''अयं निज: परो वेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितांतु वसुधैव कुटुम्बकम् ।''
(महोपनिषद् – 7.70–73)

यह अपना है या पराया है , ऐसा आकलन संकुचित चित्त वाले व्यक्तियों का होता है। आम तौर पर कुटुम्ब का अर्थ परिवार से लिया जाता है, जिसमें पति–पत्नी एवं संतानें और बुजुर्ग माता–पिता होते हैं । मनुष्य इन्हीं के लिए धन–संपदा अर्जित करता है। कुछ विशेष अवसरों पर वह निकट संबंधियों और मित्रों पर भी धन का एक अंश खर्च कर लेता है। किंतु उदात्त वृत्ति वाले तो समाज के सभी सदस्यों के प्रति परोपकार भावना रखते हैं और सामर्थ्य होने पर पूरी वसुधा को कुटुम्ब मानते हुए सब की मदद करते हैं। यह सुभाषित ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के भावना की प्रेरणा देता है।

जब तक दूसरे सुखी नहीं होंगे हम सुखी नहीं हो सकते। इसलिए सब सुखी हों, सब स्वस्थ हों, सब का कल्याण हो।

अत: जीवन का ध्येय विश्व का कल्याण है। यही सनातन विचार है।

❑❑❑

शिव-पार्वती विवाह

सती के विरह में शंकरजी की दयनीय दशा हो गई। वे हर पल सती का ही ध्यान करते रहते और उन्हीं की चर्चा में व्यस्त रहते। उधर सती ने भी शरीर का त्याग करते समय संकल्प किया था कि मैं राजा हिमालय के यहाँ जन्म लेकर शंकरजी की अर्द्धांगिनी बनूँगी।

अब जगदम्बा का संकल्प व्यर्थ होने से तो रहा। वे उचित समय पर राजा हिमालय की पत्नी मैना के गर्भ में प्रविष्ट होकर उनकी कोख में से प्रकट हुईं। पर्वतराज की पुत्री होने के कारण वे 'पार्वती' कहलाईं। जब पार्वती बड़ी होकर सयानी हुईं तो उनके माता-पिता को अच्छा वर तलाश करने की चिंता सताने लगी।

एक दिन अचानक देवर्षि नारद राजा हिमालय के महल में आ पहुँचे और पार्वती को देख कहने लगे कि इसका विवाह शंकरजी के साथ होना चाहिए और वे ही सभी दृष्टि से इसके योग्य हैं। पार्वती के माता-पिता के आनंद का यह जानकर ठिकाना न रहा कि साक्षात जगन्माता सती ही उनके यहाँ प्रकट हुई हैं। वे मन ही मन भाग्य को सराहने लगे।

एक दिन अचानक भगवान शंकर सती के विरह में घूमते-घूमते उसी प्रदेश में जा पहुँचे और पास ही के स्थान गंगावतरण में तपस्या करने लगे। जब हिमालय को इसकी जानकारी मिली तो वे पार्वती को लेकर शिवजी के पास गए।

वहाँ राजा ने शिवजी से विनम्रतापूर्वक अपनी पुत्री को सेवा में ग्रहण करने की प्रार्थना की। शिवजी ने पहले तो आनाकानी की, किंतु पार्वती की भक्ति देखकर वे उनका आग्रह न टाल न सके। शिवजी से अनुमति मिलने के बाद तो पार्वती प्रतिदिन अपनी सखियों को साथ ले उनकी सेवा करने लगीं। पार्वती हमेशा इस बात का सदा ध्यान रखती थीं कि शिवजी को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो। वे हमेशा उनके चरण धोकर चरणोदक ग्रहण करतीं और षोडशोपचार से पूजा करतीं। इसी तरह पार्वती को भगवान शंकर की सेवा करते दीर्घ समय व्यतीत हो गया। किंतु पार्वती जैसी सुंदर बाला से इस प्रकार एकांत में सेवा लेते रहने पर भी शंकर के मन में कभी विकार नहीं हुआ।वे सदा अपनी समाधि में ही निश्चल रहते। उधर देवताओं को तारक नाम का असुर बड़ा त्रास देने लगा। यह जानकर कि शिव के पुत्र से ही तारक की मृत्यु हो सकती है, सभी देवता शिव-पार्वती का विवाह कराने की चेष्टा करने लगे।उन्होंने शिव को पार्वती के प्रति अनुरक्त करने के लिए कामदेव को उनके पास भेजा, किंतु पुष्पायुध का पुष्पबाण भी शंकर के मन को विक्षुब्ध न कर सका। उलटा कामदेव उनकी क्रोधाग्नि से भस्म हो गए।

इसके बाद शंकर भी वहाँ अधिक रहना अपनी तपश्चर्या के लिए अंतरायरूप समझ कैलास की ओर चल दिए। पार्वती को शंकर की सेवा से वंचित होने का बड़ा दुःख हुआ, किंतु उन्होंने निराश न होकर अब की बार तप द्वारा शंकर को संतुष्ट करने की मन में ठानी।उनकी माता ने उन्हें सुकुमार एवं तप के अयोग्य समझकर बहुत मना किया, इसीलिए उनका 'उमा'- उ+मा (तप न करो) - नाम प्रसिद्ध हुआ। किंतु पार्वती पर इसका असर न हुआ। अपने संकल्प से वे तनिक भी विचलित नहीं हुईं। वे भी घर से निकल उसी शिखर पर तपस्या करने लगीं, जहाँ शिवजी ने तपस्या की थी। तभी से लोग उस शिखर को 'गौरी-शिखर' कहने लगे। वहाँ उन्होंने पहले वर्ष फलाहार से जीवन व्यतीत किया, दूसरे वर्ष वे पर्ण (वृक्षों के पत्ते) खाकर रहने लगीं और फिर तो उन्होंने पर्ण का भी त्याग कर दिया और इसीलिए वे 'अपर्णा' कहलाईं।

इस प्रकार पार्वती ने तीन हजार वर्ष तक तपस्या की। उनकी कठोर तपस्या को देख ऋषि-मुनि भी दंग रह गए। अंत में भगवान आशुतोष का आसन हिला। उन्होंने पार्वती की परीक्षा के लिए पहले सप्तर्षियों को भेजा और पीछे स्वयं वटुवेश धारण कर पार्वती की परीक्षा के निमित्त प्रस्थान किया।

जब इन्होंने सब प्रकार से जाँच-परखकर देख लिया कि पार्वती की उनमें अविचल निष्ठा है, तब तो वे अपने को अधिक देर तक न छिपा सके। वे तुरंत अपने असली रूप में पार्वती के सामने प्रकट हो गए और उन्हें पाणिग्रहण का वरदान देकर अंतर्धान हो गए।

पार्वती अपने तप को पूर्ण होते देख घर लौट आईं और अपने माता-पिता से सारा वृत्तांत कह सुनाया। अपनी दुलारी पुत्री की कठोर तपस्या को फलीभूत होता देखकर

माता-पिता के आनंद का ठिकाना नहीं रहा। उधर शंकरजी ने सप्तर्षियों को विवाह का प्रस्ताव लेकर हिमालय के पास भेजा और इस प्रकार विवाह की शुभ तिथि निश्चित हुई।

सप्तर्षियों द्वारा विवाह की तिथि निश्चित कर दिए जाने के बाद भगवान् शंकरजी ने नारदजी द्वारा सारे देवताओं को विवाह में सम्मिलित होने के लिए आदरपूर्वक निमंत्रित किया और अपने गणों को बारात की तैयारी करने का आदेश दिया।उनके इस आदेश से अत्यंत प्रसन्न होकर गणेश्वर शंखकर्ण, केकराक्ष, विकृत, विशाख, विकृतानन, दुन्दुभ, कपाल, कुंडक, काकपादोदर, मधुपिंग, प्रमथ, वीरभद्र आदि गणों के अध्यक्ष अपने-अपने गणों को साथ लेकर चल पड़े।नंदी, क्षेत्रपाल, भैरव आदि गणराज भी कोटि-कोटि गणों के साथ निकल पड़े। ये सभी तीन नेत्रों वाले थे। सबके मस्तक पर चंद्रमा और गले में नीले चिन्ह थे। सभी ने रुद्राक्ष के आभूषण पहन रखे थे। सभी के शरीर पर उत्तम भस्म पुती हुई थी।

इन गणों के साथ शंकरजी के भूतों, प्रेतों, पिशाचों की सेना भी आकर सम्मिलित हो गई। इनमें डाकनी, शाकिनी, यातुधान, वेताल, ब्रह्मराक्षस आदि भी शामिल थे। इन सभी के रूप-रंग, आकार-प्रकार, चेष्टाएँ, वेश-भूषा, हाव-भाव आदि सभी कुछ अत्यंत विचित्र थे। किसी के मुख ही नहीं था और किसी के बहुत से मुख थे। कोई बिना हाथ-पैर के ही था तो कोई बहुत से हाथ-पैरों वाला था। किसी के बहुत सी आँखें थीं और किसी के पास एक भी आँख नहीं थी। किसी का मुख गधे की तरह, किसी का सियार की तरह, किसी का कुत्ते की तरह था।

उन सबने अपने अंगों में ताजा खून लगा रखा था। कोई अत्यंत पवित्र और कोई अत्यंत वीभत्स तथा अपवित्र गणवेश धारण किए हुए था। उनके आभूषण बड़े ही डरावने थे उन्होंने हाथ में नर-कपाल ले रखा था। वे सबके सब अपनी तरंग में मस्त होकर नाचते-गाते और मौज उड़ाते हुए महादेव शंकरजी के चारों ओर एकत्रित हो गए।

चंडीदेवी बड़ी प्रसन्नता के साथ उत्सव मनाती हुई भगवान् रुद्रदेव की बहन बनकर वहाँ आ पहुँचीं। उन्होंने सर्पों के आभूषण पहन रखे थे। वे प्रेत पर बैठकर अपने मस्तक पर सोने का कलश धारण किए हुए थीं।

धीरे-धीरे वहाँ सारे देवता भी एकत्र हो गए। उस देवमंडली के बीच में भगवान श्री विष्णु गरुड़ पर विराजमान थे। पितामह ब्रह्माजी भी उनके पास में मूर्तिमान् वेदों, शास्त्रों, पुराणों, आगमों, सनकादि महासिद्धों, प्रजापतियों, पुत्रों तथा कई परिजनों के साथ उपस्थित थे। देवराज इंद्र भी कई आभूषण पहन अपने ऐरावत गज पर बैठ वहाँ पहुँचे थे। सभी प्रमुख ऋषि भी वहाँ आ गए थे। तुम्बुरु, नारद, हाहा और हूहू आदि श्रेष्ठ गंधर्व तथा किन्नर भी शिवजी की बारात की शोभा बढ़ाने के लिए वहाँ पहुँच गए थे। इनके साथ ही सभी जगन्माताएँ, देवकन्याएँ, देवियाँ तथा पवित्र देवांगनाएँ भी वहाँ आ गई थीं।

इन सभी के वहाँ मिलने के बाद भगवान शंकरजी अपने स्फुटिक जैसे उज्ज्वल, सुंदर वृषभ पर सवार हुए। दूल्हे के वेश में शिवजी की शोभा निराली ही छटक रही थी।इस दिव्य और विचित्र बारात के प्रस्थान के समय डमरुओं की डम-डम, शंखों के गंभीर नाद, ऋषियों-महर्षियों के मंत्रोच्चार, यक्षों, किन्नरों, गन्धर्वों के सरस गायन और देवांगनाओं के मनमोहक नृत्य और मंगल गीतों की गूँज से तीनों लोक परिव्याप्त हो उठे।

उधर हिमालय ने विवाह के लिए बड़ी धूम-धाम से तैयारियाँ कीं और शुभ लग्न में शिवजी की बारात हिमालय के द्वार पर आ लगी। पहले तो शिवजी का विकट रूप तथा उनकी भूत-प्रेतों की सेना को देखकर मैना बहुत डर गईं और उन्हें अपनी कन्या का पाणिग्रहण कराने में आनाकानी करने लगीं।

पीछे से जब उन्होंने शंकरजी का करोड़ों कामदेवों को लजाने वाला सोलह वर्ष की अवस्था का परम लावण्यमय रूप देखा तो वे देह-गेह की सुधि भूल गईं और शंकर पर अपनी कन्या के साथ ही साथ अपनी आत्मा को भी न्योछावर कर दिया।

हर-गौरी का विवाह आनंदपूर्वक संपन्न हुआ। हिमाचल ने कन्यादान दिया। विष्णु भगवान तथा अन्यान्य देव और देव-रमणियों ने नाना प्रकार के उपहार भेंट किए। ब्रह्माजी ने वेदोक्त रीति से विवाह करवाया। सब लोग अमित उछाह से भरे अपने-अपने स्थानों को लौट गए।

❑❑❑

बारहवीं पुतली पद्मावती की कथा

बारहवीं पुतली पद्मावती ने जो कथा सुनाई वह इस प्रकार है-

एक दिन रात के समय राजा विक्रमादित्य महल की छत पर बैठे थे। मौसम बहुत सुहाना था। पूनम का चांद अपने यौवन पर था तथा सब कुछ इतना साफ-साफ दिख रहा था, मानों दिन हो। प्रकृति की सुन्दरता में राजा एकदम खोए हुए थे। सहसा वे चौंक गए। किसी स्त्री की चीख थी। चीख की दिशा का अनुमान लगाया। लगातार कोई औरत चीख रही थी और सहायता के लिए पुकार रही थी। उस स्त्री को विपत्ति से छुटकारा दिलाने के लिए विक्रम ने ढाल-तलवार सम्भाली और अस्तबल से घोड़ा निकाला। घोड़े पर सवार हो फौरन उस दिशा में चल पड़े। कुछ ही समय बाद वे उस स्थान पर पहुंचे।

उन्होंने देखा कि एक स्त्री 'बचाओ-बचाओ' कहती हुई बेतहाशा भागी जा रही है और एक विकराल दानव उसे पकड़ने के लिए उसका पीछा कर रहा है। विक्रम ने एक क्षण भी नहीं गंवाया और घोड़े से कूद पड़े। युवती उनके चरणों पर गिरती हुई बचाने की विनती करने लगी। उसकी बांहें पकड़कर विक्रम ने उसे उठाया और उसे बहन सम्बोधित करके ढांढस बंधाने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि वह राजा विक्रमादित्य की शरणागत है और उनके रहते उस पर कोई आंच नहीं आ सकती। जब वे उसे दिलासा दे रहे थे, तो राक्षस ने अट्टाहास लगाया।उसने विक्रम को कहा कि उन जैसा एक साधारण मानव उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता तथा उन्हें वह कुछ ही क्षणों में पशु की भांति चीर-फाड़कर रख देगा। ऐसा बोलते हुए वह विक्रम की ओर लपका।

विक्रम ने उसे चेतावनी देते हुए ललकारा। राक्षस ने उनकी चेतावनी का उपहास किया। उसे लग रहा था कि विक्रम को वह पलभर में मसल देगा। वह उनकी ओर बढ़ता रहा। विक्रम भी पूरे सावधान थे। वह ज्यों ही विक्रम को पकड़ने के लिए बढ़ा विक्रम ने अपने को बचाकर उस पर तलवार से वार किया। राक्षस भी अत्यन्त फुर्तीला था। उसने पैंतरा बदलकर खुद को बचा लिया और भिड़ गया। दोनों में घमासान युद्ध होने लगा। विक्रम ने इतनी फुर्ती और चतुराई से युद्ध किया कि राक्षस थकान से चूर चूर हो गया तथा शिथिल पड़ गया। विक्रम ने अवसर का पूरा लाभ उठाया तथा अपनी तलवार से राक्षस का सिर धड़ से अलग कर दिया।

विक्रम ने समझा राक्षस का अन्त हो चुका है, मगर दूसरे ही पल उसका कटा सिर फिर अपनी जगह आ लगा और राक्षस दोगुने उत्साह से उठकर लड़ने लगा। इसके अलावा एक और समस्या हो गई। जहां उसका रक्त गिरा था वहां एक और राक्षस पैदा हो गया। राजा विक्रमादित्य क्षण भर को तो चकित हुए, किन्तु विचलित हुए बिना एक साथ दोनों राक्षसों का सामना करने लगे।

रक्त से जन्मे राक्षस ने मौका देखकर उन पर घूंसे का प्रहार किया तो उन्होंने पैंतरा बदलकर पहले वार में उसकी भुजाएं तथा दूसरे वार में उसकी टांगें काट डालीं। राक्षस असह्य पीड़ा से इतना चिल्लाया कि पूरा वन गूंज गया। उसे दर्द से तड़पता देखकर राक्षस का धैर्य जवाब दे गया और मौका पाकर वह सिर पर पैर रखकर भागा। चूंकि उसने पीठ दिखाई थी, इसलिए विक्रम ने उसे मारना उचित नहीं समझा। उस राक्षस के भाग जाने के बाद विक्रम उस स्त्री के पास आए तो देखा कि वह भय के मारे कांप रही है।

उन्होंने उससे कहा कि उसे निश्चिन्त हो जाना चाहिए और भय त्याग देना चाहिए, क्योंकि दानव भाग चुका है। उन्होंने उसे अपने साथ महल चलने को कहा, ताकि उसे उसके मां-बाप के पास पहुंचा दें। उस स्त्री ने जवाब दिया कि खतरा अभी टला नहीं है, क्योंकि राक्षस मरा नहीं। वह लौटकर आएगा और उसे ढूंढकर फिर इसी स्थान पर ले आएगा।

जब विक्रम ने उसका परिचय जानना चाहा, तो वह बोली कि वह सिंहल द्वीप की रहने वाली है और एक ब्राह्मण की बेटी है। एक दिन वह तालाब में सखियों के साथ नहा रही थी तभी राक्षस ने उसे देख लिया और मोहित हो गया। वहीं से वह उसे उठाकर यहां ले आया और अब उसे अपना पति मान लेने को कहता है।

उसने सोच लिया है कि अपने प्राण दे देगी, मगर अपनी

पवित्रता नष्ट नहीं होने देगी। वह बोलते-बोलते सिसकने लगी और उसका गला रुंध गया। विक्रम ने उसे आश्वासन दिया कि वे राक्षस का वध करके उसकी समस्या का अन्त कर देंगे और उन्होंने राक्षस के फिर से जीवित होने का राज पूछा। उस स्त्री ने जवाब दिया कि राक्षस के पेट में एक मोहिनी वास करती है जो उसके मरते ही उसके मुंह में अमृत डाल देती है।

उसे तो वह जीवित कर सकती है, मगर उसके रक्त से पैदा होने वाले दूसरे राक्षस को नहीं, इसलिए वह दूसरा राक्षस अपंग होकर दम तोड़ रहा है। यह सुनकर विक्रम ने कहा कि वे प्रण करते हैं कि उस राक्षस का वध किए बगैर अपने महल नहीं लौटेंगे, चाहे कितनी भी प्रतीक्षा क्यों न करनी पड़े। उन्होंने जब उससे मोहिनी के बारे में पूछा तो स्त्री ने अनभिज्ञता जताई। विक्रम एक पेड़ की छाया में विश्राम करने लगे। तभी एक सिंह झाड़ियों में से निकलकर विक्रम पर झपटा।

चूंकि विक्रम पूरी तरह चौकन्ने नहीं थे, इसलिए सिंह उनकी बांह पर घाव लगाता हुआ चला गया। अब विक्रम भी पूरी तरह हमले के लिए तैयार हो गए। दूसरी बार जब सिंह उनकी ओर झपटा तो उन्होंने उसके पैरों को पकड़कर उसे पूरे जोर से हवा में उछाल दिया। सिंह बहुत दूर जाकर गिरा और क्रुद्ध होकर उसने गर्जना की। दूसरे ही पल सिंह ने भागने वाले राक्षस का रूप धर लिया। अब विक्रम की समझ में आ गया कि उसने छल से उन्हें हराना चाहा था। वे लपककर राक्षस से भिड़ गए।

दोनों में फिर भीषण युद्ध शुरू हो गया। जब राक्षस की सांस लड़ते-लड़ते फूलने लगी तो विक्रम ने तलवार उसके पेट में घुसा दी।

राक्षस धरती पर गिरकर दर्द से चीखने लगा। विक्रम ने उसके बाद तलवार से उसका पेट चीर दिया। पेट चीरते ही मोहिनी कूदकर बाहर आई और अमृत लाने दौड़ी। विक्रम ने बेतालों का स्मरण किया और उन्हें मोहिनी को पकड़ने का आदेश दिया। अमृत न मिल पाने के कारण राक्षस तड़पकर मर गया।

मोहिनी ने अपने बारे में बताया कि वह शिव की गणिका थी जिसे किसी गलती की सजा के रूप में राक्षस की सेविका बनना पड़ा। महल लौटकर विक्रम ने ब्राह्मण कन्या को उसके माता-पिता को सौंप दिया और मोहिनी से खुद विधिवत विवाह कर लिया।

❑❑❑

असली यज्ञ

काशी से पाँच मील दूर गंगा के तट पर स्थित एक कुटिया में 'मोकलपुर के बाबा' इस नाम से प्रसिद्ध परम विद्वान संत रहते थे।

एक बार पं. मदनमोहन मालवीय उनके दर्शन के लिए पहुँचे। बाबा से बातचीत के दौरान महामना मालवीय जी ने कहा – 'अंग्रेजों ने हमारी प्राचीन शिक्षा-पद्धति को विकृत कर दिया है। मैं काशी में भारतीयता के आधार पर शिक्षा देने वाले विद्यालय की स्थापना के प्रयास में लगा हूँ।'

मोकलपुर के बाबा ने कहा – 'पण्डित जी, जरूर कीजियेगा विद्यालय की स्थापना। मेरी आहुति भी इस विद्यादान के यज्ञ में जरूर पड़ेगी।'

सन् 1950 ई. के दिसम्बर में बाबा ने एक यज्ञ का आयोजन कराया। अनेक राजा-रईस उसमें भाग लेने आये। बाबा ने कहा – 'यदि यज्ञ के बीच मेरा निधन हो जाय, तब भी यज्ञ जारी रहना चाहिये। यज्ञ में आये धन में से ज्यादा-से-ज्यादा हिन्दू विश्वविद्यालय के लिये दान देना चाहिये।' दूसरे दिन ही बाबा ने शरीर त्याग दिया। उनके भक्तों ने यज्ञ से प्राप्त पूरा धन विश्वविद्यालय को दान कर दिया।

❑❑❑

पंचतंत्र से प्रेरक कहानी

तीन मछलियाँ

नदी के किनारे उसी नदी से जुडा एक बडा जलाशय था। जलाशय में पानी गहरा होता है, इसलिए उसमें काई तथा मछलियों का प्रिय भोजन जलीय सूक्ष्म पौधे उगते हैं। ऐसे स्थान मछलियों को बहुत रास आते हैं। उस जलाशय में भी नदी से बहुत-सी मछलियां आकर रहती थी। अंडे देने के लिए तो सभी मछलियां उस जलाशय में आती थी। वह जलाशय लम्बी घास व झाडियों द्वारा घिरा होने के कारण आसानी से नजर नहीं आता था।

उसी जलाशय मे तीन मछलियों का झुंड रहता था। उनके स्वभाव भिन्न थे। अन्ना संकट आने के लक्षण मिलते ही संकट टालने का उपाय करने में विश्वास रखती थी। प्रत्यु कहती थी कि संकट आने पर ही उससे बचने का यत्न करो। यद्दी का सोचना था कि संकट को टालने या उससे बचने की बात बेकार है करने कराने से कुछ नहीं होता जो किस्मत में लिखा है, वह होकर रहेगा।

एक दिन शाम को मछुआरे नदी में मछलियां पकडकर घर जा रहे थे। बहुत कम मछलियां उनके जालों में फंसी थी। अत: उनके चेहरे उदास थे। तभी उन्हें झाडियों के ऊपर मछलीखोर पक्षियों का झुंड जाता दिखाई दिया। सबकी चोंच में मछलियां दबी थी। वे चौंके ।

एक ने अनुमान लगाया ''दोस्तो! लगता है झाडियों के पीछे नदी से जुडा जलाशय है, जहां इतनी सारी मछलियां पल रही हैं।''

मछुआरे पुलकित होकर झाडियों में से होकर जलाशय के तट पर आ निकले और ललचाई नजर से मछलियों को देखने लगे।

एक मछुआरा बोला ''अहा! इस जलाशय में तो मछलियां भरी पडी हैं। आज तक हमें इसका पता ही नहीं लगा।'' ''यहां हमें ढेर सारी मछलियां मिलेंगी।'' दूसरा बोला।

तीसरे ने कहा ''आज तो शाम घिरने वाली है। कल सुबह ही आकर यहां जाल डालेंगे।''

इस प्रकार मछुआरे दूसरे दिन का कार्यक्रम तय करके चले गए। तीनों मछलियों ने मछुआरे की बात सुन ली थी।

अन्ना मछली ने कहा ''साथियों! तुमने मछुआरे की बात सुन ली। अब हमारा यहां रहना खतरे से खाली नहीं है। खतरे की सूचना हमें मिल गई है। समय रहते अपनी जान बचाने का उपाय करना चाहिए। मैं तो अभी ही इस जलाशय को छोडकर नहर के रास्ते नदी में जा रही हूँ। उसके बाद मछुआरे सुबह आएं, जाल फेंकें, मेरी बला से। तब तक मैं तो बहुत दूर अटखेलियां कर रही होऊंगी।' प्रत्यु मछली बोली ''तुम्हें जाना है तो जाओ, मैं तो नहीं आ रही। अभी खतरा आया कहां है, जो इतना घबराने की जरुरत है । हो सकता है संकट आए ही न। उन मछुआरों का यहां आने का कार्यक्रम रद्द हो सकता है, हो सकता है रात को उनके जाल चूहे कुतर जाएं, हो सकता है उनकी बस्ती में आग लग जाए। भूचाल आकर उनके गांव को नष्ट कर सकता है या रात को मूसलाधार वर्षा आ सकती है और बाढ में उनका गांव बह सकता है। इसलिए उनका आना निश्चित नहीं है। जब वह आएंगे, तब की तब सोचेंगे। हो सकता है मैं उनके जाल में ही न फंसूं।''

यद्दी ने अपनी भाग्यवादी बात कही ''भागने से कुछ नहीं होने का। मछुआरों को आना है तो वह आएंगे। हमें जाल में फंसना है तो हम फंसेंगे। किस्मत में मरना ही लिखा है तो क्या किया जा सकता है?''

इस प्रकार अन्ना तो उसी समय वहां से चली गई। प्रत्यु और यद्दी जलाशय में ही रही। भोर हुई तो मछुआरे अपने जाल को लेकर आए और लगे जलाशय में जाल फेंकने और मछलियां पकडने। प्रत्यु ने संकट को आए देखा तो लगी जान बचाने के उपाय सोचने। उसका दिमाग तेजी से काम करने लगा। आस-पास छिपने के लिए कोई खोखली जगह भी नहीं थी। तभी उसे याद आया कि उस जलाशय में काफी दिनों से एक मरे हुए ऊदबिलाव की लाश तैरती रही है। वह उसके बचाव के काम आ सकती है।

जल्दी ही उसे वह लाश मिल गई। लाश सडने लगी थी। प्रत्यु लाश के पेट में घुस गई और सडती लाश की सडांध अपने ऊपर लपेटकर बाहर निकली। कुछ ही देर में मछुआरे के जाल में प्रत्यु फंस गई। मछुआरे ने अपना जाल खींचा और मछलियों को किनारे पर जाल से उलट दिया। बाकी मछलियां तो तडपने लगीं, परन्तु प्रत्यु दम साधकर मरी हुई मछली की तरह पडी रही। मछुआरे को सडांध का भभका लगा तो मछलियों को देखने लगा। उसने निश्चल पडी प्रत्यु को उठाया और सूंघा ''आक! यह तो कई दिनों की मरी मछली है। सड चुकी है।'' ऐसे बडबडाकर बुरा-सा मुंह बनाकर उस मछुआरे ने प्रत्यु को जलाशय में फेंक दिया।

प्रत्यु अपनी बुद्धि का प्रयोग कर संकट से बच निकलने में सफल हो गई थी। पानी में गिरते ही उसने गोता लगाया और सुरक्षित गहराई में पहुंचकर जान की खैर मनाई।

यद्दी भी दूसरे मछुआरे के जाल में फंस गई थी और एक टोकरे में डाल दी गई थी। भाग्य के भरोसे बैठी रहने वाली यद्दी ने उसी टोकरी में अन्य मछलियों की तरह तडप-तडप कर प्राण त्याग दिए।

सीख : भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहने वाले का विनाश निश्चित है।

लक्ष्मी का वास किस घर में होता है ?

एक सेठ जी रात्रि में सो रहे थे। स्वप्न में उन्होंने देखा कि लक्ष्मी जी कह रही है - 'सेठ, अब तेरा पुण्य समाप्त हो गया है, इसलिये तेरे घर से मैं थोड़े दिनों में चली जाऊँगी। तुझे मुझसे जो माँगना हो, वह माँग ले।'

सेठ ने कहा - 'कल सबेरे अपने कुटुम्ब के लोगों से सलाह करके जो माँगना होगा, माँग लूँगा।'

सवेरा हुआ। सेठ ने स्वप्न की बात कही। परिवार के लोगों में से किसी ने हीरा-मोती आदि माँगने को कहा, किसी ने स्वर्ण राशि माँगने की सलाह दी, कोई अन्न माँगने के पक्ष में था और कोई वाहन या भवन। सबसे अन्त में सेठ की छोटी बहू बोली - 'पिताजी ! जब लक्ष्मी को जाना ही है तो ये वस्तुएँ मिलने पर भी टिकेंगी कैसे ? आप इन्हें माँगगे तो भी ये मिलेंगी नहीं। आप तो माँगिये कि कुटुम्ब में प्रेम बना रहे। कुटुम्ब में सब लोगों में परस्पर प्रीति रहेगी तो विपत्ति के दिन भी सरलता से कट जायँगे।'

सेठ को छोटी बहू की बात पसन्द आयी। दूसरी रात्रि में स्वप्न में उन्हें फिर लक्ष्मीजी के दर्शन हुए। सेठ ने प्रार्थना की - 'देवि ! आप जाना ही चाहती हैं तो प्रसन्नता से जायँ, किन्तु यह वरदान दें कि हमारे कुटुम्बियों में परस्पर प्रेम बना रहे।'

लक्ष्मीजी बोली - 'सेठ ! ऐसा वरदान तुमने माँगा कि मुझे बाँध ही लिया। जिस परिवार के सदस्यों में परस्पर प्रीति है, वहाँ से मैं जा कैसे सकती हूँ।'

एक बार देवी लक्ष्मी ने इन्द्र से कहा भी था -

गुरवो यत्र पूज्यन्ते यत्राह्वानं सुसंस्कृतम्।
अदन्तकलहो यत्र तत्र शक्र वसाम्यहम्।।

'इन्द्र ! जिस घर में गुरुजनों का सत्कार होता है, दूसरों के साथ जहाँ सभ्यतापूर्वक बात की जाती है और जहाँ मुख से बोलकर कोई कलह नहीं करता। दूसरे के प्रति मन में क्रोध आने पर भी जहाँ लोग चुप ही रह जाते हैं। मैं वहीं रहती हूँ।'

❑❑❑

देश प्रदेश से प्राप्त समाचार

1. श्रीगुर्जर गौड़ ब्राह्मण प्रगतिशील संस्था अजमेर एवं नवयुवक मंडल अजमेर द्वारा धूमधाम से मनाई गई महर्षि गौतम जयंती

दिनांक 30 मार्च 2025 को महर्षि गौतम की जयंती संस्था के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री अनिल जी जोशी की अध्यक्षता में हर्षोल्लास से मनाई गई, जिसमें समाज के सभी आयु वर्ग के महिला पुरुषों ने आनंद उमंग के साथ भाग लिया ।

संस्था के लोहागल स्थित नवीन निर्माणाधीन भूखंड पर समाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर महर्षि जयंती में भाग लिया। इस कार्यक्रम में नवयुवक मंडल का उल्लेखनीय, सराहनीय और सक्रिय योगदान रहा। सबसे पहले महर्षि के चित्र पर माल्यार्पण किया गया, पंडित आनंद जोशी ने विधि विधान के साथ हवन और पूजन का कार्य पूर्ण करवाया। समाज के प्रबुद्ध जनों की उपस्थिति में महर्षि की आरती हुई उसके पश्चात ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर समाज के मेधावी विद्यार्थियों को मेडल प्रदान कर उत्साह वर्धन किया गया एवं अन्य गतिविधियों और क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन कर समाज एवं परिवार का नाम रोशन करने वाले विद्यार्थियों एवं समाज बंधुओ का भी मंच से सम्मान किया गया। भवन निर्माण में महत्वपूर्ण आर्थिक सहयोग करने वाले समाज के आदरणीय भामाशाहों का भी सम्मान किया गया।

भूखंड पर ऑफिस रूम बनाकर समाज के लिए समर्पित करने वाले आदरणीय चंद्र दत्त जी जोशी का मंच से आभार व्यक्त किया गया। पारिवारिक कारण से आप कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो पाए। अब इस कमरे का लोकार्पण आदरणीय चंद्र दत्त जी अक्षय तृतीया पर करेंगे।

धार्मिक प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसमें सभी उपस्थित समाज बंधुओं एवं माता बहनों को अत्यंत आनंद आया। सभी ने इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। नवीन दानदाताओं ने बढ़ चढ़कर निर्माण के लिए घोषणाएं की। अंत में मंच से सभी दानदाताओं कार्यकर्ताओं एवं समाज बंधुओ का हार्दिक आभार प्रकट किया गया जिन के सहयोग के बिना इस कार्यक्रम की सफलता की कामना नहीं की जा सकती थी। आज कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा यह महर्षि गौतम जी का ही आशीर्वाद है। आप सभी का प्रेम और समय दान है। आप सभी इसी प्रकार संस्था पर प्रेम बनाए रखें।

महर्षि गौतम जी की भोजन प्रसादी में जिस प्रकार से समाज के बंधुओं माता बहनों बच्चो की उपस्थिति रही है यह हमारे समाज की एकता का परिचय है और हमारे समाज की जागृति का एक अनुपम उदाहरण है। आज के कार्यक्रम में आप सभी की सहभागिता ने यह साबित कर दिया है कि हम सब एक हैं और नवीन भवन निर्माण के लिए तैयार हैं। भोजन प्रसाद के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

पधारे हुए सभी समाज बंधुओं ने समिति का स्वागत किया अभिनंदन किया और सफल कार्यक्रम के लिए बधाइयां दी ।उसके लिए समिति की ओर से भी सभी समाज बंधुओ को हार्दिक आभार और धन्यवाद।

प्रेषक - सर्वेश्वर तिवारी

सचिव-श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण

प्रगतिशील संस्था अजमेर

2. सोलापुर (महाराष्ट्र) से जयन्ती समाचार

हर साल की तरह इस साल भी सोलापुर गुर्जरगौड ब्राह्मण समाज की ओर से धूमधाम से मनाई गई श्री महर्षि गौतम जयंती।

सोलापुर गुर्जरगौड ब्राह्मण समाज की ओर से जयंती

के एक महीने पहले ही तैयारी शुरू हो गयी थी। श्री महर्षि गौतम जयंती के उत्सव के लिए कार्यक्रम पत्रिका, श्री महर्षि गौतम जी की आरती की पत्रिका एवम् महर्षि गौतम जी का चित्र आदि बनाये गए। समाज के गुर्जरगौड युवक मंडल ने समाज के हर घर जा कर कार्यक्रम पत्रिका, आरती पत्रिका, और महर्षि गौतम जी का चित्र घर घर जाकर भेंट किए। ''घर घर गौतम, हर घर गौतम'' का नारा युवा देते थे।

श्री महर्षि गौतम जयंती के दिन पर शोभायात्रा बालिवेस चौक से समाज के गायत्री भवन तक निकाली गई। बच्चे, युवा, महिला, पुरुष समाज के सभी लोग इस शोभायात्रा में शामिल हुए। बग्घी में श्री महर्षि गौतम जी की प्रतिमा रखी गई और प्रभू श्रीराम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान जी का वेष धारण कर के समाज के युवा युवती बैठे थे। बैंड बाजा के साथ, ''महर्षि गौतमजी की जय'' का नारा देते हुए शोभायात्रा गायत्री भवन पहुंची। गायत्री भवन नारों से गूंज उठा। श्री महर्षि गौतम जी की आरती की तैयारी की गई। फिर महाआरती हुई आरती का आनंद सभी समाज बंधू ने लिया। सभी समाज बंधुओं के मस्तक पर चंदन का लेप लगाया गया। आरती के पश्चात कई समाज के ज्येष्ठ बंधुओं ने समाज को संबोधित किया, मार्गदर्शन किया, समाज में एकता बनाये रखने का आवाहन किया।

तत्पश्चात महिलाएं खेल का कार्यक्रम एवं नृत्य आदि का आनंद लेती रहीं। सभी समाज बंधुओं ने फोटोसेशन का भी आनंद उठाया। प्रभू श्रीराम, लक्ष्मण, सीता, हनुमानजी बने उनके साथ भी फोटो खिचवाने के लिये समाज बंधु आगे आये। हर चीज का समाज बंधु आनंद लेते रहे।

अन्त में प्रसाद का कार्यक्रम हुआ। सभी ने भोजन का आनन्द लिया। इस तरह हर्ष उल्हास के साथ श्री महर्षि गौतम जयंती मनाई गई।

प्रेषक- अनिल भगीरथ जोशी
इंजिनियर एवं पत्रकार, सोलापुर

3. श्री पुष्कर गौतमाश्रम में महर्षि गौतम जयन्ती मनाई गई।

अक्षपाद महर्षि गौतम जी की जयंती श्री पुष्कर गौतम आश्रम में महर्षि के अभिषेक पूजा अर्चना और अन्त में हवन के साथ बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जयंती के इस पुनीत पर्व पर समिति के ऑडिटर महोदय श्री वी पी शर्मा जी सपत्नीक सपौत्र आश्रम में पधारे। पंडित प्रहलाद जी शर्मा इंडोकिया जिला टोंक निवासी ने सवेरे साढ़े पांच बजे से ही महर्षि के अभिषेक के साथ पूजा प्रारंभ करवाई। साथ में रुद्राभिषेक एवं हवन बहुत ही सुंदर तरीके से करवाया। इस अवसर पर संस्था के महामंत्री बालकृष्ण शर्मा विशेष आमंत्रित सदस्य ट्रस्ट समिति श्री सावित्री प्रसाद गौतम सपुत्र मैनेजर श्री महेश जी शर्मा आश्रम स्टाफ श्री किशन जी गौतम श्रीमती सविता गौतम अनीता जी राकेश जी दिलखुश जी आयुषी गौतम राजकुमार पाराशर तथा पुष्कर से समाज बंधु उपस्थित रहे। अंत में आरती के बाद प्रसाद वितरण किया गया।

- बालकृष्ण शर्मा, महामंत्री

शर्मा परिवार की ओर से
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीकान्त शर्मा, संदीप, प्रदीप, मुदित, तनिश, चार्विक
एवं समस्त शर्मा परिवार

Mateshwari Textile
Mateshwari Enterprises
Mateshwari Creation

Specialist in

All Type of Printing, Dyeing Export Garment,
Domestic Fabrics Printed Garment,
Fabrics Scarves, Stoles, Pario, Bandana etc.

E-225-A, MIA, Phase 2, Road No. 6, Basni, Jodhpur
Mob. : 9414140460, 8854099000, 9414002360
E-mail : sksmt007@gmail.com

Bhaghya Overseas

All type of
Handicrafts Goods in Iron &
Wooden Furniture
(Exports & Domestic)

KHASRA NO. 115, SALAWAS BORANDA ROAD, JODHPUR
Mob. : 9982551856 • E-mail : sandeep171987@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

जवाहरलाल उपाध्याय
संगठन मंत्री, महासभा
ट्रस्टी गौतमाश्रम पुष्कर
ट्रस्टी गौतमाश्रम हरिद्वार
उपाध्यक्ष गौतमाश्रम त्र्यंबकेश्वर
ट्रस्टी अ.भा.म.गौ.शै.पा. न्यास

J L Builders

JDH HARDWARE

जेडी हार्डवेयर

रवि उपाध्याय

गौरव उपाध्याय

गर्वित उपाध्याय

जवाहरलाल उपाध्याय

'गौरव' 76बी, मानसरोवर, शंकर नगर, जोधपुर- 342008 (राज.)
मो. 94141-30222, 96108-30222, 94147-53555, 96601-78191

श्रीमान् ____________________

प्राप्त नहीं करने पर निम्न पते पर वापस भेजें :
SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM
Pushkar-Ajmer (Raj.)

मुद्रक : श्री आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर फो. 9414336820